सत्यमेव जयते

चेतना

अठारहवाँ अंक

जून, 2006

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

चेतना परिवार

बैठे हुए हैं बायें से पत्रिका के परामर्शी श्री उदय शंकर प्रसाद, पत्रिका के संरक्षक श्री राकेश कुमार वर्मा तथा कल्याण अधिकारी श्री रमेश प्रसाद कंठ।

खड़े हैं बायें से श्री अजित कुमार सिन्हा, स०ले०अधि० (जी०डी०), श्री एस०भी०के० चिन्नम, महालेखाकार महोदय के सचिव, पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री देवव्रत गुप्ता तथा पत्रिका के सम्पादक श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'।

सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

अठारहवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन
वीरचन्द पटेल पथ, पटना-800 001

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-800001

अंक : अठारहवाँ
(जून 2006)

मूल्य : राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की सतत सेवा

मुख पृष्ठ आवरण परिचय

पटना से 120 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित बोध गया में स्थापित
80 फीट ऊँची भगवान बुद्ध की मूर्त्ति

मुद्रक : **प्रगति प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स**
एडिसन्स आर्केड
फ्रेजर रोड, पटना-800001
सम्पर्क- 9431426300

चेतना परिवार

☆

संरक्षक

श्री राकेश कुमार वर्मा

महालेखाकार (लेखा एवं हकंदारी), बिहार, पटना

☆

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

☆

श्री उदय शंकर प्रसाद

उप-महालेखाकार, बिहार, पटना

☆

श्री फैसल इमाम

उप-महालेखाकार, बिहार, पटना

☆

प्रधान सम्पादक

श्री देवव्रत गुप्ता

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

☆

सम्पादक

श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

अनु. अधि. (प्र.), हिन्दी कक्ष

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
01.	चेतना परिवार			
02.	अनुक्रमणिका			
03.	महालेखाकार का संदेश			05
04.	उप-महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश			06
05.	उप-महालेखाकार (लेखा एवं भी.एल.सी.) का संदेश			07
06.	सम्पादकीय			08
07.	आपके पत्र			10-16
08.	समय का महत्व	निबन्ध	श्री देवव्रत गुप्ता	17
09.	नयी सुबह	कहानी	श्री मनमीत कुमार	20
10.	स्मृति	कविता	स्व. रघुनाथ प्रसाद	23
11.	भारत में अंग्रेजी का भविष्य	निबन्ध	श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'	24
12.	माँ	कविता	सुश्री गरिमा सिन्हा	27
13.	अष्टांग योग	लेख	श्री दिलीप कुमार सिंह	28
14.	सावन पुरिया	कहानी	श्री हरेराम प्रधान	34
15.	यात्रा वृत्तांत	संस्मरण	श्री शिवदयाल सिंह	36
16.	नेताजी	कविता	श्री पंकज कुमार शर्मा	44
17.	रामचरित मानस में विज्ञान	लेख	श्री राजू कुमार सिंह	46
18.	सर्दी-जुकाम के फायदे	हास्य-व्यंग्य	श्री श्रीराम पांडेय	52
19.	हिन्दी पखवारा-हिन्दी दिवस 2005	रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष	55

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं, रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं। रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रधान सम्पादक

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का

संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का अठारहवाँ अंक अति शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है।

पत्रिका की समस्त रचनाएं पठनीय तथा विचारपूर्ण हैं। विचारों की अभिव्यक्ति में रचनाकारों की प्रतिभा मुखर है। वस्तुतः पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने अच्छे विचारों को प्रकट करने का सुअवसर मिलता है। मुझे खुशी है कि इस कार्यालय में अच्छे लेखक भी हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों को तथा सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका पुष्पित-पल्लवित होती रहे- यही मेरी मंगलकामना है।

राकेश कुमार वर्मा
महालेखाकार

सत्यमेव जयते

उपमहालेखाकार (प्रशा/पेन), बिहार, पटना का

संदेश

प्रसन्नता की बात है कि इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का अठारहवाँ अंक शीघ्र ही प्रकाशित होकर सहृदय पाठकों के कर-कमलों में समर्पित किया जा रहा है।

आशा है, यह अंक पाठकों के समक्ष खरा उतरेगा। इस अंक की समस्त रचनाएं पठनीय तथा भावप्रद हैं। हिन्दी भाषा के विकास की एक कड़ी के रूप में यह पत्रिका सहायक होगी। मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों एवं प्रकाशन से सम्बद्ध लोगों को उनकी लगन एवं मेहनत के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

उदय शंकर प्रसाद
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

सत्यमेव जयते

उपमहालेखाकार (लेखा एवं भी.एल.सी.), बिहार, पटना का

संदेश

मुझे यह जानकर दिली खुशी है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का अठारहवां अंक जल्द ही प्रकाशित हो रहा है। इस पत्रिका ने यहां के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के दिलो-दिमाग में हिन्दी भाषा के प्रति जो जुनून पैदा किया है वो काबिले तारीफ है- ऐसा उनकी रचनाओं को पढ़कर महसूस होता है।

आखिर में, मैं इस पत्रिका की अहर्निश तरक्की की दिली तमन्ना करता हूँ कि भविष्य में यह इस कार्यालय का नाम और रौशन करे।

फ़ैसल इमाम
उपमहालेखाकार (लेखा एवं भी.एल.सी.)

सम्पादकीय.....

○ श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

सुधी एवं सहृदय पाठकों के कर-कमलों में इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के अठारहवें अंक को सौंपते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है।

प्रारम्भ से ही यह पत्रिका हिन्दी भाषा एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं में इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सशक्त अभिव्यक्ति के रंग-बिरंगे पुष्प मनमोहक रूप में पाठकों के समक्ष खिलाते रही है, चतुर्दिक उसकी खुशबू बिखेरती रही है। पाठकों को सुवासित वातावरण मिलता रहे, चिन्तन, मनन और अध्ययन के साथ-साथ लेखक-पाठक का सम्बन्ध मधुर बना रहे, राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार जन-जन के मानस को प्रेरित कर अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान करे- बस यही प्रयास हम करते आ रहे हैं।

कहते हैं, राष्ट्रभाषा की सेवा राष्ट्र की सेवा होती है। भाषा में समाज के विचारों की अभिव्यक्ति होती है, उसमें राष्ट्र के सुख-दुख, उल्लास--वेदना का सफल चित्रण होता है। उसकी सांस में हमारा दर्द डोलता है, उसके स्वरों में लोक-वाणी की तरलता रहती है, उसकी धड़कन में मानव समाज का विराट जीवन ध्वनित रहता है। हम इससे पलायन नहीं कर सकते, क्योंकि जीवन पलायन का विलास नहीं, संघर्ष की साधना है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। उसकी साधना समाज के विकास और कल्याण की साधना है। अतः भाषा और साहित्य व्यक्ति के अश्रु-हास की गाथा होते हुए भी सामाजिक विश्वासों और विषमताओं का दर्पण भी होता है।

अतएव राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी के सम्यक उत्थान के लिए, दूसरी प्रभुत्वशाली भाषाओं के दबदबे का सामना करने के लिए हमें हिन्दी में ऐसे सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना चाहिए जिसमें आज के जीवन, भावनाओं, संघर्षों, उतार-चढ़ाव का प्रतिबिम्ब हो। यही एक ऐसा सही माध्यम है जो परमाणु युग की आवश्यकताओं और अनुभवों के अनुरूप नयी तरह की ज़िन्दगी की प्यासी पीढ़ी से प्रत्यक्ष सम्पर्क जोड़ सकता है। वह पीढ़ी जिसके लिए अपने माता-पिता के युग की धारणाएं अर्थहीन हो गई हैं। यह कोई आसान काम नहीं है, पर हिन्दी को यदि इस सदी के शेष वर्षों में एक महत्वपूर्ण शक्ति बनना है तो उसे पुनरूत्थानवाद से प्रेरित होने के बजाय जीवन की वास्तविकताओं का सामना करना ही होगा।

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' समय की इसी गत और गति से, इसी दिशा और दशा से लेखकों एवं पाठकों को अवगत कराने की चेष्टा कर रही है। कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों से हमारी विनती है कि वे अपनी रचनाएं- कथा, संस्मरण, निबन्ध, लेख, कविता तथा कार्यालय कार्य-कलाप से संबंधित रचनाएं प्रत्येक माह 'हिन्दी कक्ष' को देते रहें ताकि पत्रिका का ससमय प्रकाशन होता रहे। इस दिशा में हमारा यह पवित्र कर्त्तव्य होता है कि हम सभी मिलकर इस पत्रिका को अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करें।

साथ ही हमारे सुधी पाठकों से भी अनुरोध है कि उन्हें यह पत्रिका कैसी लगी, वे कृपया अपने विचारों से हमें अवगत कराने का कष्ट करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और उपयोगी, रोचक, पठनीय और ज्ञानवर्द्धक बनाने में अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अनुप्रेरित करने की कृपा करेंगे।

अन्त में, हिन्दी के अनन्य प्रेमी एवं पत्रिका के संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा तथा परामर्शदातृ समिति के समस्त सदस्यों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिनके असीम प्यार एवं अटूट स्नेह की लौ में यह पत्रिका आलोकित होती रही। पत्रिका के सफल चित्रांकन एवं प्रकाशन के लिए मैं श्री अजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, जी.डी. को कोटिशः धन्यवाद देता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी !

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सतरहवां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से समाज के हर पक्ष को परिभाषित करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' का लेख 'राष्ट्र निर्माण में साहित्य' विचारोत्तेजक तथा प्रभावपूर्ण है। स्वामी विवेकानन्द के ओजस्वी विचारों एवं शिक्षाओं पर आधारित श्री राजू कुमार सिंह का लेख भी स्वामीजी का पूर्ण परिचय कराने में सक्षम रहा है। श्री मनमीत कुमार की कहानी 'समय' तथा सुश्री गरिमा सिन्हा की कविता 'दहेज प्रथा'- दोनों ही अति मार्मिक तथा सराहनीय हैं ।

मुख पृष्ठ पर प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर भव्य हैं। जीवन्त छाया-चित्रों से सजी-संवरी पत्रिका के कलेवर, स्पष्ट मुद्रण तथा स्तरीय रचना संयोजन के लिए पत्रिका परिवार को बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना।

तरसेम चन्द
उपमहालेखाकार
कार्यालय, महालेखाकार (ले.एवं ह.)
पंजाब, चण्डीगढ़

चण्डीगढ़
10.3.2006

आपके पत्र

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 17वें अंक की प्राप्ति हुई। अंक में समाविष्ट रचनाएं सरल, सुबोध, सुन्दर एवं बोधप्रद हैं। अंक के सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद।

लेखा अधिकारी
हिन्दी कक्ष
कार्यालय, महालेखाकार (ले.एवं ह.)
गुजरात, रेसकोर्स रोड, राजकोट

राजकोट, गुजरात
15.2.2006

आपके पत्र

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 17वां अंक पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट लेख, कहानी, कविता इत्यादि बहुत ही मनोयोग से लिखी हुई हैं। सभी रचनाएं पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से भी सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखंड, रांची

रांची, झारखंड
20.1.2006

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 17वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' का लेख 'राष्ट्र-निर्माण में साहित्य' साहित्य एवं साहित्यकारों की महत्ता को बखूबी प्रकट करता है। श्री मनमीत कुमार की कहानी 'समय' एवं श्री वशिष्ठ कुमार हेम्बरम की कविता 'नशाबंदी' भाव-प्रवण एवं रोचक हैं। इसके साथ ही श्री राजू कुमार सिंह एवं श्री शिव दयाल सिंह की रचनाएं भी अच्छी लगीं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

पंजाब, चण्डीगढ़
20.2.2006

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

आपके पत्र

आपकी गृह पत्रिका 'चेतना' का 17वां अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में निहित सभी रचनाएं सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

बेंगलूर
06.2.2006

हिन्दी अधिकारी, हिन्दी कक्ष
महालेखाकार (ले.एवं ह.) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूर

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 17वां अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु हार्दिक बधाई! पत्रिका की रूप-सज्जा तथा रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सक्रियता, राजभाषा निष्ठा की परिचायक हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चय ही प्रेरणा तथा उत्साह का संचार होगा।

पत्रिका में श्री राजू कुमार सिंह का लेख 'स्वामी विवेकानन्द और उनके सपनों का भारत' तथा श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' का लेख 'राष्ट्र-निर्माण में साहित्य' रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। अत: लेखकों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका के विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
एवं प्रधान सम्पादक 'वीरांगना'
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं. ह.), द्वितीय
लेखा भवन, झांसी रोड, मध्य प्रदेश

ग्वालियर
14.2.2006

आपके पत्र

आपके कार्यालय की पत्रिका 'चेतंना' के सतरहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ ही कार्यालय में इससे सृजनात्मक प्रतिभा को भी प्रोत्साहन मिलेगा। श्री मनमीत कुमार की कहानी 'समय' तथा श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार की कविता 'तुम' विशेष प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.)
हरियाणा, लेखा भवन, चण्डीगढ़

चण्डीगढ़
16.2.2006

समय का महत्त्व

–श्री देवव्रत गुप्ता
व.ले.अधि.

कहते हैं, समय और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं । सबसे महान होता है समय । परिवर्त्तन के रथ पर भागता चलता है वह । सरिता की धारा निर्बाध गति से बहती जाती है । पवन एक क्षण के लिए भी विश्राम की झपकी नहीं लेता । समय नित-नूतन नये सौन्दर्य का नया प्रसाधन उपस्थित करता रहता है । समय की शिला पर नियति मधुर चित्र बनाती है और मिटा देती है । कभी वसन्त के मादक-मनमोहक फूल खिलते हैं, कभी पतझड़ के पीले पत्ते उड़ते हैं, कभी उल्लास की चाँदनी खिलती है, कभी कठोर सूरज का दाहक स्पर्श मिलता है । समय एक सूत्रधार की तरह सबको नचाता है । अत: युग परिवर्त्तन को रोका नहीं जा सकता, समय के रथ को अवरूद्ध नहीं किया जा सकता है ।

समय के सम्बन्ध में एक बहुत ही प्रचलित कहावत है– 'A stitch in time saves nine' अर्थात् समय पर थोड़ा-सा प्रयत्न भी आगे की बहुत सारी परेशानियों से बचाता है । किसी विद्वान ने तो यहाँ तक कह डाला है कि 'वक्त को बर्बाद न करो, क्योंकि जीवन इसी से बना है ।' विश्व के जितने भी महापुरूष हुए हैं उन सबने समय के महत्त्व को पहचाना था । तभी वे विश्व को नई वस्तु दे सके । हमें भी समय के महत्त्व को जानना-पहचानना चाहिए । हाथ-पर-हाथ धर कर अवसर की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए । हमें इस कर्मस्थली में सदैव अपना कर्म करते रहना चाहिए । केवल तभी हम उन्नति कर सकते हैं । हमें कभी भी समय को नष्ट नहीं करना चाहिए, उसका हमेशा सदुपयोग करना चाहिए । अंग्रेजी के सुविख्यात कवि शेक्सपियर ने कहा है कि "समय को बर्बाद नहीं करो नहीं तो तुम्हें बर्बाद कर देगा ।" आज भी हमारे बीच ऐसे बड़े-बड़े व्यक्ति हैं जिनके पास बेकार के कामों के लिए 'समय' नहीं हैं । उनके समय का प्रत्येक पल कर्मसंकुल जीवन से जुड़ा हुआ है । वे अवसर को हाथ से जाने नहीं देते । कर्म की आराधना में लीन, समय के प्रत्येक पल का सदुपयोग वे करते हैं । समय का सदुपयोग करते रहने से व्यक्ति के चरित्र का विकास होता है । आलस्य को दूर करने का सही तरीका है समय का उचित उपयोग करने की आदत डालना । ऐसे व्यक्ति को भीषण परिस्थिति भी शिथिल नहीं बना सकती है ।

तूफान से लड़ने की शक्ति उसमें आ जाती है । उसके मनोभाव पुष्ट और मजबूत होते हैं । उसका आत्मबल बढ़ता है । ठीक इसके विपरीत समय का सदुपयोग नहीं करने वाला व्यक्ति आगे चलकर पछताता है । कभी तो आलस्य के चलते और कभी चित्त की दुविधा के चलते वह निर्णय नहीं ले पाता है और कर्म से हिचक उठता है ।

समय का उचित मूल्य आँकने वाला व्यक्ति 'प्रत्युत्पन्नमति' अर्थात तुरंत निर्णय लेने की क्षमता वाला व्यक्ति होता है । संदेह में घिरा हुआ व्यक्ति तो अकर्मण्य हो उठता है । निष्क्रियता की रस्सी से उसके पैर बँधे रहत हैं । वह भूल जाता है कि मानव-जीवन प्रारम्भ से अंत तक एक कठिन परीक्षा-स्थल है । समस्याएँ पीछा नहीं छोड़तीं । विपदाओं की नदियाँ उमड़ती रहती हैं । ऐसे अवसर पर जो चूक जाता है, वह समय की दौड़ में बहुत पीछे पड़ जाता है। समय के महत्व को समझने वाला व्यक्ति आगे बढ़कर अपने कर्मो को गति प्रदान करता है । तभी तो युग उनकी ओर 'शीघ्र निर्णय' के लिए आँखें उठाता है । वह व्यक्ति युग-पुरूष, युग स्रष्टा होता है जो उस कठिन अवसर पर निर्णय देता है, प्रश्नों का समाधान देता है–समय की माँग और परिवर्त्तन के नियमों का निर्वाह करके । इतिहास ऐसे महापुरूषों की ही उज्ज्वल कीर्तियों से परिपूर्ण है । ब्रिटेन का प्रमुख नौ सेनापति नेल्सन, फ्रांस का अपूर्व पराक्रमी, साहसी सैनिक नेपोलियन, विश्व-वंद्य बापू इत्यादि अनेक युग-पुरूषों में यह गुण अमित मात्रा में था । तभी तो वे विश्व को एक नया दर्शन दे सके ।

समय अच्छे-बुरों की पहचान के लिए हमें पर्याप्त अवसर देता है । 'समय' बदलने पर लोगों की आँखें भी बदल जाती हैं । एक झूठा मित्र समृद्धि के दिनों का साथी होता है पर बुरे दिनों में पास तक नहीं फटकता । समय सब कुछ बतला देता है । नकली मित्रों के झूठे वादों की पोल खोल देता है, सच्चे मित्रों की प्रत्यक्षता का प्रमाण उपस्थित कर देता है । झूठ-सच की परिभाषा समय भले न दे, पर उनका परिचय अवश्य दे देता है ।

समय की गति के बारे में क्या कहना ? इसकी गति से तो सबलोग वाकिफ ही हैं । कभी अभिशाप के काँटे तो कभी वरदान के सुन्दर फूल । कभी यश का राजमुकुट निन्दा की धूल में गिर पड़ता है तो कभी क्षुद्र धूलिकण आकाश की ऊँचाई में उड़ने लगता है । कभी अमीरी की कब्र पर जहरीली गरीबी पनप उठती है तो कभी गरीबी के ऊपर अमीरी के पौधे उग आते हैं । यह सब समय की लीला है । भक्त कवि सूर ने प्रभु की वन्दना करते हुए, उनकी शक्ति और कृपा की महिमा का गुणगान किया है–

"जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अन्धे को सब कुछ दरसाई, बहिरो सुनै, मूक पुनि बोले, रंक चढ़ै, सिर छत्र धराई।"

ये सब प्रभु की कृपा के व्यावहारिक उदाहरण हैं जिन्हें समय का चक्र ही सिद्ध करता है। अभिमान को पल भर में मिट्टी में मिला देना और विनय को स्वर्ग की ऊँचाई तक पहुँचा देना समय का ही गुण है।

निष्कर्षत : हम कह सकते हैं कि हमें समय की पूजा करनी चाहिए, उसका सदुपयोग करना चाहिए। समय काटने का सबसे उचित तरीका है, जीवन-पर्यन्त काम करते रहना, क्योंकि चलते रहने की विराट और अनन्त प्रकिया का सूत्रधार है यह समय जिसकी महिमा अपरम्पार है, जिसकी शक्ति अपूर्व है। समय का सदुपयोग ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण कर सकता है। इसी में मानवता का हित निहित है।

"समय सबसे अधिक महान है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों से परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु कोटि उपाय करने पर भी बीता हुआ समय नहीं बुलाया जा सकता।"

नयी सुबह

–श्री मनमीत कुमार
व.ले.अधि.

रोने-चिल्लाने की भरपूर आवाज उस छोटे-से कस्बे में गूंज रही थी। पूरे बाजार में मौत-सा सन्नाटा छाया हुआ था। बाजार तकरीबन बंद हो चुका था। प्रकाश का पार्थिव शरीर घर से बाहर रख दिया गया था। रिक्शा वाला, दूकान वाला, गाँव के बच्चे-बूढ़े आदि सभी शोकाकुल थे। सभी के प्यारे 'प्रकाश सर' ने अंतिम सांस ले ली थी। प्रकाश की पत्नी और माँ वृद्धावस्था में थे। पूरा कस्बा रो रहा था। सभी खुशियों को गम के साये ने अपनी बाँहों में भर लिया था। प्रकाश अपने तीन भाइयों में मँझला था। तीन बहनें थीं। माता-पिता भी थे। बड़े भाई का परिवार दूसरे शहर में रह रहा था। छोटे को भी एक अच्छे फर्म में नौकरी मिल गयी थी। मगर वह भी परिवार से टूट किसी अन्य शहर में बस चुका था। प्रकाश के पिता ने सेवा निवृत्ति के बाद प्रकाश के साथ ही रहना पसंद किया। क्यों न हो, प्रकाश को हमेशा सभी की चिंता लगी रहती थी।

किसे क्या करना है? क्या खाना है? क्या पहनना है ? इत्यादि सभी बातों की फ्रिक्र थी। प्रकाश की तीन बहने थीं। मगर दुर्भाग्य ऐसा हुआ तीनों की शादी अच्छी जगह नहीं हो सकी। बड़ी बहन सुमन को पास ही के एक स्कूल में नौकरी मिल गयी। लेकिन ससुराल में कुछ झंझट के कारण अपने मायके में ही बसी थी। दूसरी बहन भी पास ही में रहती थी। उसके भी पति कुछ खास नहीं करते थे।

तीसरी बहन को तो उसके पति प्रकाश के पास छोड़ न जाने कहाँ चले गये थे। प्रकाश शुरू से ही परिवार एवं समाज के प्रति समर्पित था। उसके अन्दर यह भावना भरी थी कि यदि उसे कोई अवसर मिलेगा तो अपने गाँव, परिवार आदि की खूब सेवा करेगा। प्रकाश को कोई खास सफलता तो हाथ नहीं लगी। लेकिन एक मिडिल स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गयी। उसे कुछ करना था अपने गाँव के लिए। सोचा, सूरज न बन पाया तो दिया बनकर ही गाँव में रौशनी फैलायेगा। आज जब सभी शहर की तरफ रूख कर रहे हैं, प्रकाश ने निर्णय लिया कि वह गाँव के स्कूल में ही पदस्थापना कराकर गाँव के बच्चों में ज्ञान की ज्योति जलायेगा। सौभाग्यवश उसकी पदस्थापना उसी गाँव के एक स्कूल में हो गयी।

प्रकाश अब 'प्रकाश सर' के नाम से धीरे-धीरे जाना जाने लगा। गणित के विषय पर उसकी अच्छी खासी पकड़ थी। उसकी दिनचर्या काफी कठिन थी। वह प्रातः पाँच बजे से गाँव के निर्धन बच्चों को निःशुल्क

शिक्षा देता था। फिर स्कूल से लौट कर बच्चों को पढ़ाया करता था। इतना ही नहीं, यदि किसी को थोड़े बहुत पैसे की जरूरत होती थी तो वह उसकी जरूरतों को पूरा करने की कोशिश भी करता। गाँव के सुख-दुख, शादी-व्याह आदि में सभी जगह सशरीर उपस्थित रहता था। पूरे गाँव में उसकी इज्जत थी। गाँव का मुखिया हो या कोई बदमाश सभी उसका आदर करते थे। उसके माता-पिता ने चाहा कि वह शादी कर ले। मगर वह डरता था कि पत्नी अगर ठीक नहीं आयी तो वह अपने घर-परिवार, गाँव की सेवा कैसे कर पायेगा ? अंततः गाँव वाले के दवाब में आकर उसे शादी करनी पड़ी।

प्रकाश की शादी के समय पूरा गाँव खुश था। प्रकाश की पत्नी का नाम था चंदना। वह शांत एवं संस्कारी लड़की थी। उसने प्रकाश के स्वभाव के अनुसार रहना शुरू कर दिया। प्रकाश की तीनों बहनों से उसके भी सम्बंध बहुत अच्छे थे। सास-ससुर की भी प्रिय थी वह। प्रकाश के दोनों भाई एक औपचारिक संबंध निभाते हुए समय-समय पर गाँव अकेले या फिर परिवार के साथ आ जाया करते थे।

समय अपने पंख लगा कर उड़ रहा था। घर में सभी की दिनचर्या सामान्य चल रही थी। कालान्तर में प्रकाश के दो लड़के हुये। अचानक वह मनहूस दिन आ गया।

वह स्कूल के लिए घर से निकला। मगर रास्ते में ही उसकी सायकिल की एक ट्रक से भिड़न्त हो गयी। पूरे गाँव में इस घटना से हाहाकार मच गया। प्रकाश के माथे पर गहरी चोट लगी थी। लोगों के प्यारे प्रकाश सर, बेहोश थे। डाक्टरों ने शहर ले जाने की पेशकश कर दी। घर में उतना पैसा था नहीं। परन्तु गाँव वालों ने आपस में करीब चार लाख रूपये जमा किये। मगर होनी को कुछ और ही मंजूर था। प्रकाश ने अंतिम साँस ले ली। धन के रहते हुये भी मन ने तन का साथ छोड़ दिया था।

प्रकाश के दोनों बच्चे क्रमशः छः साल तथा तीन साल के थे। काल के इस क्रूर सत्य को समझने लायक नहीं थे। माँ विक्षिप्त एवं मूर्छित अवस्था में थी। दोनों भाई भी सपरिवार वहाँ पहुँच गये। प्रकाश का अंतिम संस्कार भी हो गया। बड़े भाई ने घोषणा कर डाली कि प्रकाश के बड़े बेटे को वह पढ़ा-लिखा कर बड़ा आदमी बनायेगा। छोटे भाई ने प्रकाश के छोटे बेटे के पालन की जिम्मेवारी ले ली। मगर एक आवेश में कही बात यथार्थवादी दुनिया में सहीं नहीं उतरी। दोनों भाईयों की घोषणाओं ने उन दोनों घरों में कलह के बीज बो दिये। आन्तरिक कलह के वातावरण में अंततः दोनों भाईयों ने अपने वादाओं को पूरा करने में कठिनाई दिखाने शुरू कर दी। घर में कलह ने प्रेम भाव का स्थान ले लिया। किसने घर में

क्या-क्या किया उसकी मिसाल दी जाने लगी । कर्त्तव्य को एहसास का दर्जा दिया जाने लगा । चन्दना के सास-ससुर कबतक प्रकाश के हक के लिए लड़ते । वे भी टूट चुके थे । जन्म का बन्धन अर्थ के बन्धन के सामने हार गया । चन्दना सभी बातों पर नजर रख रही थी । मगर जुबान शांत थी । ऐसा लगता था कि इन बातों का उसे पहले से ही अहसास था। एक दिन अचानक उसने एक निर्णय लिया । वह सुबह उठी और अकेले गाँव के बाजार चली गयी । घर वाले स्तब्ध थे । आखिर कहाँ गयी है । शाम में करीब छः बजे वह वापस आ गयी । किसी से कुछ नहीं बोली । प्रकाश सर के कुर्सियो, बेंच, बोर्ड आदि को संभालने लगी । घर वालों ने उन सभी बातों को चन्दना का प्रकाश के प्रति प्रेम समझा । रात को सभी सो गये ।

सुबह जब सभी की आँखें खुलीं तो पाया कि चन्दना ने निर्णय ले लिया था कि वह गाँव छोड़कर नहीं जायेगी । बल्कि गाँव के ही बच्चों को पढ़ा-लिखा कर प्रकाश के सपने को पूरा करेगी । गाँव के आठ-दस बच्चों को चन्दना पढ़ा रही थी । प्रकाश के दोनो भाई शर्माये हुये-से थे । प्रकाश के माता-पिता को चन्दना में प्रकाश नजर आने लगा ।

शायद प्रकाश का नया जन्म हो गया था और चन्दना की नयी सुबह का शुभारम्भ हो चुका था ।

गाँव वाले भी खुश थे कि उनका प्रकाश पुनः वापस आ गया ।

चन्दना पढ़ाकर वापस आकर अपनी सास की गोद में सर रख फूट -फूट कर रोने लगी और कहने लगी -"माँ! किसी के सामने हाथ पसारने की अब जरूरत नहीं, उन्होंने मुझे निर्बल नहीं सबल बनाया है । हम यह जिन्दगी की जंग जीत लेंगे ।" दोनों बच्चे भी वहाँ आ गये । वे भी रोने लगे । आँसुओं की बरसात में जिन्दगी की नयी कोंपल ने जन्म ले लिया था ।

फिर चन्दना ने तीनों बहनों की ओर रूख करते हुए कहा- "मुझे देखो ! तुम्हारे प्रकाश भैया जिंदा हैं, मरे नहीं हैं ।"

स्मृति

–स्व. रघुनाथ प्रसाद
भू. उपमहालेखाकार

(1)

टपक पड़े
बीच में टपक पड़े
ये गरम-गरम आँसू
जैसे टपकने के लिए
सिर्फ राह देख रहे हों ।

(2)

मन की कोमल तन्तुओं पर
विस्मृति की मोटी परत छायी हो
गरम-गरम सांसों की गर्मी से
पिघल कर ठंडी-ठंडी आहें
अश्रु धारा बन
टपकने से नहीं रूक पाती ।

(3)

अवसाद, विषाद तो पुरानी है
विस्मृति की मोटी परतों तले
बस ढँक कर जम गयी थी
किन्तु यादों की गरमाहट से
निरावरण हो पिघल गयी
और मौके की तलाश में
अपने भारीपन का एहसास
कराते हुए टपक पड़ी ।

(4)

अनवरत सोच, पीड़ा, क्षोभ
अशान्ति अवसाद से दूर
मानव भविष्य को रक्षित
एवं जागृत रखने के लिए
विस्मृति ढँक देती है
कोमल तंतुओं को,
विस्मृति की एक मोटी चादर से
ताकि मानव भूल कर, भव बाधा पर कर सके ।

(5)

किन्तु कालचक्र उभार देता है
चिरकालीन विस्मृति को,
स्मृति पटल पर
ताजा कर देता है
विस्मृत सुख-दुःख के क्षणों को
और आँसू बेताब हो
टपक पड़ते है ।

भारत में अंग्रेजी का भविष्य

—श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'
अनु.अधि.(प्र.)/हिन्दी कक्ष

अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है, यह अंग्रेजों की भाषा है । सोलह सौ ईस्वी में जब अंग्रेज व्यापारी-वर्ग के रूप में व्यापार करने के ख्याल से साम्राज्यवादी नीति के प्रसार हेतु भारत में आये तो वे धीरे-धीरे समस्त भारत में छाने लगे । उनकी ताकत बढ़ती गई, वे हम भारतवासियों पर हावी होते गये । उनकी भाषा-अंग्रेजी हमारे समस्त जीवन को चारों ओर से घेरती गई । भारत पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया । देश दासता के सीखचों से बाँध दिया गया । देश पर अंग्रेजों का और अंग्रेजी का पूर्णतः शासन होने लगा । अंग्रजों ने अपनी प्रभुता के शिकंजे को मजबूत बनाने के लिए हमारी आजादी की लड़ाई के दिनों में ही जन-जीवन को पूरी तरह घेर लेने की घृणित योजना कार्यान्वित की । विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व-विद्यालयों में अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में प्रयुक्त किया गया । लॉर्ड मेकाले की शिक्षा-नीति का सहारा लेकर अंग्रेजों ने हमारी संस्कृति के उदार तत्वों को विस्मृत कर देने का बीड़ा उठाया । इतिहास और राष्ट्रभाषा पर इनकी क्रूर नीति अत्यन्त भयावह हो उठी । अतः उन्होंने हिन्दी के विरोध में भारत की अन्य बोलियों को, भाषाओं को खड़ा करके हिन्दी को अपदस्थ किया, हिन्दी जानने-पढ़ने वालों के मन में हीन वृत्ति पनपाने में खुलकर सहायता की । ऐसा अंग्रेजों ने इसलिए किया कि उनलोगों को विश्वास था कि अंग्रेजी के रेशमी धागे में बंधा हुआ देश (भारत) कभी भी, स्वाधीन होने पर भी, अपनी संस्कृति के विस्मृत छन्दों को स्मरण नहीं कर सकेगा और इस तरह भारतवर्ष सदैव मानसिक रूप से गुलाम बना रहेगा ।

लेकिन हमारी हिन्दी भला अंग्रेजी से क्यों हार बैठती ? हमने हिन्दी को राष्ट्र की वैचारिक जागृति का प्रबुद्ध माध्यम बनाकर अंग्रेजों और अंग्रेजी के विरोध में क्रांति का बिगुल फूँक दिया । हिन्दी के पीछे भारतीय जनता की विराट शक्ति जो थी । यह न तो दरवार की संकीर्ण मनोवृत्ति का आश्रय पाकर पनपी है और न लोहे अथवा सोने के इशारे पर आगे बढ़ी है । इसका अभ्युदय और विकास तो लोक-जीवन के अन्तस्तल से हुआ है ।

इसलिए हिन्दी में युग जीवन का सच्चा दर्द है, उसमें निरन्तर प्रवाह में गतिशील बने रहने का आग्रह और उत्साह है । इस कारण इसकी गति रोकी नहीं जा सकी । आजादी की बाधाओं को इसने हँसते-हँसते झेला, राष्ट्रीय-आन्दोलन की विशाल साधना का भार वहन किया । अतः अहिन्दी प्रान्त के भी राष्ट्र नेताओं ने उन्मुक्त भाव से हिन्दी

को भावात्मक एकता का एकमात्र सूत्र समझा । यह बात दीगर है कि मुट्ठी भर आभिजात्य कुल के ऊँचे-ऊँचे पदाधिकारी आज भी अंग्रेजी को ही हिन्दी से ज्यादा महत्व देने के पक्षधर हैं । इसमें उनका स्वार्थ निहित है । वे शोषण एवं स्वार्थ की गर्हित मनोवृत्ति से स्वयं को ऊपर उठा ही नहीं पाते हैं । वे उस प्रचंड पारावार को देखकर भी नहीं देखना चाहते जो उमंग और गति में तरंगित हो रहा है । दुर्भाग्य की बात तो यह कि हमारी राष्ट्रीय सरकार भी हिन्दी को सभी जगह प्रचलित करने की ओर ठोस कदम नहीं उठा पा रही है । सामान्यत: शिक्षा-विभाग और संस्कृति विभाग ऐसे व्यक्तियों के हाथों सौंपा जाता है जो अन्दर से हिन्दी की ऐतिहासिक अनिवार्यता और राष्ट्रीय आवश्यकता के कायल नहीं हैं । फलत: अभी भी अंग्रेजी का रथ अपनी समस्त चकाचौंध के साथ हमारे राष्ट्रीय प्रांगण में धमाचौकड़ी मचाता हुआ निर्भीक भाव से विचरण कर रहा है । यदा-कदा हिन्दी के पक्ष में कुछ सुविधाएँ प्रदान कर दी जाती हैं, पर एक सजग, सक्रिय और सफल राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में इसे अपना अपेक्षित गौरव अभी तक नहीं मिल पाया है ।

आखिर हिन्दी को अपेक्षित गौरव मिले भी तो कैसे ? उसके विषय में कभी यह कहा जाता है कि हिन्दी अभी प्रौढ़ा नहीं हुई है, उसके द्वारा पारिभाषिक एवं तकनीकी शिक्षा नहीं दी जा सकती है । कभी हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी को अधिक समृद्ध बतलाया जाता है । कभी यह कह दिया जाता है कि समस्त देशवासी हिन्दी को अपनी राष्ट्रभाषा बनाने और मानने के पक्ष में नहीं हैं । यदि ये सभी आरोप सही भी हैं तो ये हास्यास्पद हैं । यदि हिन्दी कुछ सीमा तक असमर्थ है तो उसकी असमर्थता दूर करने की पूरी तत्परता, लगन एवं ईमानदारी से चेष्टा होनी चाहिए, न कि उसे अपदस्थ करने की मंशा या उपेक्षित रखने का भाव ।

पर हम इतना अवश्य मानते हैं कि अंग्रेजी को इस प्रकार भारतवासियों के जीवन पर लाद कर बहुत दिनों तक नहीं रखा जा सकता, क्योंकि जनता, जनता का भू-भाग ओर जनता की संस्कृति से ही राष्ट्र निर्मित होता है । एक विशिष्ट भौगोलिक खंड में फैले हुए लोक-जीवन की अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है, अपना भावात्मक एकीकरण होता है । एक सहज इतिहास की पृष्ठभूमि में पनपता हुआ यह लोक जीवन सामान्य आशा-आकांक्षा से दोलित रहता है, पवित्र राष्ट्रीय वृत्ति में बँधा हुआ सुख-दु:ख के फूल-काँटे चुनता रहता है । उसके स्वप्न लगभग समान होते हैं, उसकी वेदना का सागर एक ही गहराई और संवेदना से गूँजता रहता है । लोक-जीवन के इ स लहराते सागर को एक सूत्रता प्रदान करती है उस राष्ट्र की भाषा– राष्ट्रभाषा जो किसी भी देश की एक अनिवार्य आवश्यकता होती है जिसके सहारे संघर्ष की साधना का रथ आगे बढ़ता है, प्रगति के रास्ते और लक्ष्य प्राप्त किये जाते हैं । कहने की आवश्यकता नहीं

है कि अंग्रेजों की गुलामी के समय जबतक हमने भाषा की एकसूत्रता को सँवारा नहीं तब तक आजादी के संघर्ष में व्यापकता की लहर नहीं आने पाई । अन्तर्प्रान्तीय संगठन की भाषा बनकर हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा बनी । स्वतंत्र होने पर संविधान के द्वारा हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में हमने स्वीकार लिया ।

हमारे देश में अंग्रेजी थोपी गई भाषा है । इसे अंग्रेजों ने भारत में अपना राजकाज चलाने के लिए भारतीयों पर थोपा था । किन्तु, अब हमारा देश स्वाधीन है । हिन्दी यहाँ की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा है । यह जनता की शक्ति है और इसे लोक चेतना प्राप्त है और जब किसी भाषा को इतिहास और युग की शक्ति का सहारा मिल जाता है तब उसे रोक सकना किसी के लिए संभव नहीं हो पाता । यही इतिहास का सत्य है । अत: हिन्दी अपने आँचल में संभावना और राष्ट्र के स्वप्नों को लेकर क्षिप्र गति से आगे बढ़ती जा रही है और इसे रोक सकने का दुस्साहस कोई भी नहीं कर सकता है । इसी कारण से अंग्रेजी को प्रभुता का सिंहासन छोड़ना पड़ेगा । वह भविष्य में हमारी शिक्षा के माध्यम का अनिवार्य विषय बनकर नहीं रह सकेगी । अंग्रेजी अब विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की माध्यम-भाषा के रूप में नहीं टिक सकती । उसे हमारे देश में हिन्दी का हक छीनकर खोखले गौरव में इठलाने का कोई भी हक नहीं है ।

समय परिवर्त्तनशील है । परिवर्त्तन के रथ पर सवार होकर समस्त विश्व दौड़ता जा रहा है । गुलामी की बेड़ियाँ तोड़कर स्वाधीनता के उन्मुक्त गगन में अपने मुक्त गीतों को बिखराकर हमारा आजाद देश बड़ी तेजी से नव-निर्माण की ओर बढ़ रहा है । इस दौरान राष्ट्रभाषा हिन्दी भी अपने खोये हुए अधिकार को पाने के लिए अत्यन्त सजग, सतर्क एवं सक्रिय गौरव को अंग्रेजी के कुहर-जाल से निकाल कर ही दम लेगी । अंग्रेजी एक वैकल्पिक विषय के रूप में रहे–हमें कोई एतराज नहीं । ऐसा कहने में हमारा दृष्टिकोण अन्य भाषा अथवा बोली के प्रति घृणा से पूरित नहीं है और न गलत स्वार्थ अथवा झूठे दर्प से ही बोझिल है । हम, बस अपनी राष्ट्रीय संस्कृति के मंगल विकास के आकांक्षी हैं और तदनुरूप साधना करते हैं और ऐसा करने के क्रम में सफल होने के लिए हमें हिन्दी के महत्व को मानना ही पड़ेगा ।

संक्षेपत:, भारतवर्ष में अंग्रेजी का भविष्य इसी रूप में प्रस्तुत होगा कि वह एक वैकल्पिक विषय बनकर विशिष्ट अध्ययन का विषय ही बन सकेगी । अब अंग्रेजी के सारे 'दायित्वों' को दक्षतापूर्वक कुशलता से ढो सकने की क्षमता हिन्दी में है ।

माँ

–सुश्री गरिमा सिन्हा
द्वारा–श्री शशिभूषण प्रसाद, से.नि.व.ले.अधि.

हमारी एक आह पर उसकी रूह तड़पती है
हमारी खातिर वह हर दुःख-तूफान से लड़ती है ।
सोचने लगी कि है कौन वह महान नारी
वह है माँ, जो है सभी को प्यारी ।

भगवान का दूजा रूप है माता,
उसके ही गुण हर इंसान है गाता ।
हो सकता है लगे तुम्हें माँ बहुत कठोर है,
पर देखना दुःख में तुम्हारे वह कितनी भाव-विभोर है ।

जिसने माँ की ममता को नाप लिया,
वह महान हो जाएगा ।
रूकेगी उसके लिए जमीन,
आसमान झुक जाएगा ।

माँ की महिमा माँ ही जाने,
उसमें कितनी ममता है ।
भगवान तो फिर रूठ जाता है,
पर माँ में सब सहने की क्षमता है ।

अष्टांग योग

—श्री दिलीप कुमार सिंह
लिपिक

"बन्दों गुरु पद कंज, कृपासिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर॥
मंगल मुरति सत्गुरु, मिलवैं सर्वाधार।
धन्य-धन्य सतगुरु सुखद, महिमा कही न जाय।
जो कछु कहुं तुम्हारी, कृपा, मोते कछु न बसाय॥"

योग के आठो अंगों के समूह को अष्टांग योग कहते हैं : (1) यम, (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधि।

1. यम: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

(क) अहिंसा-कर्म, वचन अथवा मन से भी किसी की कष्ट पहुँचाना निषिद्ध है। अहिंसा परमो धर्म: परम धरम श्रुति विहित अहिंसा' (रामायण)

(ख) सत्य : जो बिलकुल सही हो, जिसमें तनिक भी सन्देह नहीं हो, जैसे हो या होना चाहिए वैसा ही वास्तविक यथार्थ। वह जो अक्षर पुरुष है, गतिशील है जिसकी प्रत्यक्ष प्राप्ति के लिए कोई गतिशील है। यथार्थत: अक्षर ही सुस्वरूप है, जिसकी प्रत्यक्षता के बिना ब्रह्मलोक भी दु:ख स्वरूप है।

अत: हम सांसारिक कर्त्तव्य कर्म करते हुए युक्ति जानकर इसका भी अनुसंधान करें।

वह जो क्षर-अक्षर-पुरुष पुरूषोत्तम है, अविचल है, यदि यह संग हुआ तो त्रिपुटी का ही भंग हुआ।

यथार्थ मिलन तो यही है, अन्य मिलन, मिलन नहीं है। यथा-

"अंक भरि-मरि भेटिया, मन नहि मानै धीर।
कह कबीर वह क्या मिला, जब लगि दोय शरीर॥"

सत्य जिसकी प्रत्यक्ष प्राप्ति के लिए ही संत-सम्मत बहिरंग एवं अन्तरंग सत्संग है।

(ग) अस्तेय- चोरी का त्याग- किसी व्यक्ति का कोई सामान पूछे बिना ले लेना चोरी है।

(घ) ब्रह्मचर्य - तन-मन एवं वचन से समस्त इन्द्रियों का संयम आवश्यक है।

(ङ) अपरिग्रह- आवश्यकता से अधिक धन-धान्यादि भोग की वस्तुओं का त्याग।

"उदर समाना अन्न ले, तन हि समाना चीर।
अधिका संग्रह ना करै, ताका नाम फकीर॥"

(संत कबीर साहब)

2. नियमः नीति, विधि, रीति, प्रथा।

(क) नीति-(i) आचार (ii) व्यवहार (iii) नियम, विधान (iv) युक्ति, उपाय। किन्तु यहां नित्य, सत्य, यथा-

"सबहि सौ धरू पाइआ, निर्वाणी, पदुनीति।

(संत गुरुनानक देवजी)

(ख) विधि-ब्रह्मा का विधान, प्रणाली, व्यवस्था।

"विधि निषेधमय कलिमल हरणि। करम कथा रविनन्दिनी वरणि॥"

(रामचरित्रमानस)

सत्संग नित अरुध्यान नित रहिये करत संलग्न हो।"

सत्संग और ध्यान नित्य नियमित रूप से निर्धारित समय पर करना चाहिए।

निषिद्ध कर्म- "व्यभिचार, चोरी, नशा, हिंसा, झूठ तजना चाहिए।"

(महर्षि मँहीँ पदावली)

व्यभिचार : परस्त्री अथवा परपुरुष के साथ रखा गया संबंध व्यभिचार है।

चोरीः किसी व्यक्ति का कोई सामान बिना पूछे ले लेना चोरी है।

नशा : दारू, गांजा, भांग, अफीमा, ताड़ी, चण्डू, मदक, कोकीना। सहित तम्बाकू नशा है जितने। तजन योग्य तज डारोतितने॥"

(महर्षि मँहीँ पदावली)

हिंसा : जिह्वा के स्वाद के लिए किसी जीव का वंध करना ही हिंसा है, जैसे- मांस, मछली का भोजन करना। मनुस्मृति में हिंसा के आठ घातक कहे गये हैं- (1) मारने की आज्ञा प्रदान करने वाला (2) अस्त्र से काटने वाला (3) टुकड़ा-टुकड़ा करने वाला (4) बेचने वाला (5) खरीदने वाला (6) भोजने बनाने वाला (7) भोजन परोसने वाला (8) खानेवाला।

झूठ-झूठ सभी पापों की पोटली है। इसमें सभी पाप समा जाते हैं। जैसे- कोई निषिद्ध कार्य कर ले और कह दे कि हमने नहीं किया है।

(ग) रीति- कायदा, यथा-

"रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय पर वचन न जाई॥"

(रामचरित मानस)

3. आसन : (i) जिसे अभ्यास द्वारा दृढ़ करना संभव है, क्योंकि दृढ़ता से देर तक एक आसन में बैठे बिना ध्यानाभ्यास सम्भव नहीं है। (ii) बैठने का विछावन (iii) बैठने का ढंग (iv) अंग-प्रत्यंग का व्यायाम।

"आसन दृढ़ आहार दृढ़ तब नियम भजन दृढ़ होय।
तब कछु पावै प्राणी नहिं तो विषय रस भोय॥"

(संत कबीर साहब)

"धड़ गर मस्तक सिधसाध बैठे आसन आसिना॥"

4. प्राणायाम : जो यम, नियम, आसन की पूर्णता पर ही सही होता है, अन्यथा पूर्ण लाभप्रद नहीं होता है वा प्राणवायु के संग वह व्यायाम है जो दुधारी तलवार-सा काम है। इसलिए इसमें लाभ-हानि दोनों की संभावना है। आहार-विहार की असावधानी में लाभ तो लेशमात्र है। हानि की संभावना ही विशेष है। इसमें प्रकारान्तर होने से जीवन की हानि भी हो सकती है।

"यथा सिंही गजो व्याघ्रो भवेदूश्यः शनैःशनैः।
तथैव सेवितो वायुख्ययाहन्ति साधकम्॥"

(शाण्डिल्योंपनिषद्)

5. प्रत्याहार : जिसमें ध्यानाभ्यास के समय मन जितनी बार भाग-भाग जाता है, अभ्यासी उतनी ही बार उसे लौटा-लौटाकर अपने लक्ष्य पर लगाता है। अथवा अभ्यासकालीन वह प्रयत्न, जिसमें बारंबार फैलती हुई सुरत का बार-बार अल्प सिमटाव होता है, फलतः मन का किंचित् टिकना हो पाता है।

परमसंत सद्गुरू महर्षि मेँहीँ परमहंस जी महाराज की वाणी।
"जहँ जहँ मन भागि जाय, ताहि तहँ तहँ से तत्क्षण।
फेरी फेरि ले आइ, लगाइय ध्येय में आपन॥

ऐसाहि करि प्रतिहार, धारणा धारण करिके।
अरे हां रे मेँहीँ औरो आगे बढ़िये, चढ़िये घर धारा धरिके॥

(महर्षि मेँहीँ पदावली)

मन जिधर-जिधर भाग जाय, उसको उसी क्षण उधर-उधर से लौटा-लौटाकर ले आइये और अपने लक्ष्य पर लगाइये।

इस प्रकार प्रत्याहार (मन को बार-बार लौटाकर लाने की क्रिया) करके (लक्ष्य पर मन का अल्प टिकाव) धारण कीजिये। महर्षि मेँहीँ परमहंस जी महाराज कहते हैं कि अपनी ही अधर-धार को पकड़ कर ऊपर चढ़िये, फिर और भी आगे बढ़िये-जैसे मन भागे तुरत लौटाइये, फिर अपने लक्ष्य पर लगाइये। परिणाम क्या होगा ?

जैसे हम अपनी बांह को फैलावें और समेटें, तो बारंबार ऐसा करते-करते बांह थक जायेगी, फिर ऐसा करने की इच्छा नहीं होगी। उसी तरह मन भागे, फिर लौटावें, बारंबार ऐसा करते-करते मन भी थक जायेगा।

"मन तू थकत थकत थकि जाई।
बिन थाके तेरो काम न सरिहौं, फिर पाछे पछिताई॥"

(संत कबीर साहब)

सब काहू को होते है, तन मन पसरै जाइ।
ऐसा कोई एक है, उल्टा माहिं समाई॥

क्यों करि उल्टा आनिये, पसर गया मन फेर।
दादू डोरी सहज की, यौं आनेघेरि घेरि॥

साध सबद सौ मिलिरहै, मन राखै बिलगाई।
साध सबद बिन क्यौं रहै, तब ही बीखरि जाई॥

तन में मन आवै नहीं, निसि दिन बाहरि जाई।
दादू मेरा जिब दुखी, रहै नहीं लौ लाई॥
कोटि जतन करि-करि मुए, यदु मन दह दिसिजाइ।
राम नाम रोक्या रहै, नाही आन उपाई॥"

(संत दादूदयाल 'साहबजी')

तन-मन में पसर जाना, ऐसा सबके साथ होता है, परन्तु ऐसे कोई-कोई ही होते हैं, जो

उलटकर अपने अन्दर में समाते हैं। मन को बहिर्मुख से उलटकर अन्तर्मुख कैसे लावें ? यह मन फिर बहिर्मुख फैल गया। दादू दयाल जी महाराज कहते हैं कि स्वभाविक (शब्द) धारा में मन को लगाकर उसे बाहर से घेर-घेरकर इस तरह अन्दर लावें। साधक शब्द के बिना क्यों रहता है ? शब्द में बिना लगे हुए मन बिखर जाता है। यह मन रात-दिन बाहर-बाहर भागता है, शरीर के अन्दर नहीं आता हैं, लौ लगाकर अन्दर में नहीं रहता है। संत दादू दयाल जी महाराज कहते हैं कि इससे मेरा जीव दु:खी है, करोड़ों जतन करके थकते-मरते हैं, परन्तु यह मन अन्तर्मुख में एकाग्र भाव को छोड़कर दसों दिशाओं में भाग जाता है।

रामनाम (उपर्युक्त सर्वव्यापक अन्तर्नाद) से रूका हुआ रहता है। दूसरा यत्न नहीं है। इससे थोड़ा टिकेगा। यह अल्प टिकाव ही हो जाएगा-धारणा।

6. धारणा : मानस जप एवं मानस ध्यान के द्वारा जब अपने लक्ष्य-बिन्दु पर अल्प टिकाव होने लगता है, तब इस अल्प टिकाव के धारणा कहते हैं।

7. ध्यान : जब देर तक मन टिकेगा तो ध्यान होगा।

"ध्यानं शून्यगतं मनः ध्यानं निर्विषयं मनः ॥"

(ध्यान बिन्दुपनिषद)

मन निर्विषय हो जाय। विषय है पांच-रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द। मन से रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द दूर हो जाय, मन इनको याद नहीं करे। मन में इन सबका कोई रूप न बने। सिर्फ उसी रूप का ध्यान हो, जिसपर मन को लगाना है। यहां से शुरू होगा, 'ध्यानं निर्विषयं मनः'। इसमें नहीं होगा। ध्यान में पूरी एकाग्रता वह है कि ख्याल करने का स्थान ही न हो। एक में जहाँ ख्याल हुआ है, वहीं है और कुछ नहीं। इस तरह एक ही एक में लगकर रहना होता है ध्यान में। लेकिन इस एक में शरीर के अवयव, टुकड़े, पुर्जे रहते हैं, इसमें फैलाव रह जाता है। रूप विषय है ही, इसमें फैलाव रह जाता है। सिमटाव ऐसा हो कि सब ओर से सिमटाव हो जाय। जब पूरी एकाग्रता हो, पूरा सिमटाव हो, दूसरा कोई ख्याल नहीं हो, तब नर्विषयं मनः भी होता है और शून्यगतं मनः भी। मन शून्य में प्रविष्ट हो जाता है। मन की एकाग्रता का रूप क्या होगा ? एक बिन्दु होगा। क्या बिन्दु की कोई तस्वीर बना सकता है ? नहीं। जितना भी पतला, बारीक चिह्न हो, उसका कुछ-न-कुछ फैलाव होगा ही। जिसमें कुछ फैलाव न हो, वह बिन्दु ध्यान है।

8. समाधि : ध्यान में जो सफल होता है, उसे प्रत्यक्ष होता जाता है। मालूम होता हे कि फैलाव सिमटाव में आ गया है। इसमें जो अपना समय व्यतीत करता है, जितनी देर तक

इसमें रहता है, संसार का सबकुछ छोड़कर बिन्दु पर ध्यानावस्थित रहता है। ऐसा ध्यानशील ऊपर बढ़ता है। चेतन आत्मा संसार के ज्ञान में नहीं रहता है, उसे भीतर ही भीतर रहते हुए सब सुख मिलता है। उसे कोई विघ्न-बाधा नहीं होती। वह परम शान्ति को पाता है, जिसे दूसरा कोई नहीं जानता।

समाधि के दो प्रकार है ? सविकल्प समाधि 2 निर्विकल्प समाधि।

सविकल्प समाधि- साधक ध्यान में जब सफल होता है, तो उसे प्रत्यक्षता होती है। वह फैलाव, सिमटाव में आता-जाता है। सुरत (ख्याल) शुद्ध हो जाता है। सुरत के निर्विषय हो जाने से मन शून्यगत हो जाता है। शून्य भावात्मक ध्यान में सुरत अनहद शब्द मण्डल को पार करती हुई सहज समाधि में एक शब्द को प्राप्त करती है जो ईश्वर की प्रथम स्फुटित पराधारा है। इसी सहचर शब्द वा कम्प को सन्तों ने अनेकों नाम से अभिहित किया है- ऊँ, स्फोट, उदगीय, रामनाम, शिवनाम, कृष्णनाम, विष्णुनाम, आहिनाम, आदिशब्द, सारशब्द, सत्यशब्द, इस्लाम में अल्लाह, ईसाई में (गॉड) ईश्वर, भगवान बुद्ध, चीन में तितीन, पारसी में अहुरमज्द आदि कहते हैं। इसमें महाकारण मण्डल 'साम्यावस्थाधारिणी' जड़ात्मक मूल प्रवृत्ति से उत्पन्न होने वाले तीन गुणों का सर्वथा अभाव हो जाता है। 'मैं' पन का बोध रहने के कारण इस अवस्था को सविकल्प समाधि कहते हैं। इसी को कैवल्य अवस्था भी कहते हैं।

निर्विकल्प समाधि : पूर्वोक्त स्थिति के बाद जब साधक के चित्त में ध्येय वस्तु के नाम की स्मृति लुप्त हो जाती है। 'मैं' पन का बोध करानेवाला स्मरण नहीं रहता, तब अपने (चित्त के) स्वरूप का भी भान नहीं रहने के कारण स्वरूप के अभाव की-सी स्थिति हो जाती है। उस समय सब प्रकार के विकल्पों का अभाव हो जाने के कारण केवल चित्त में ध्येय पदार्थ ही रह जाता है 'जाना तुम्हहिं तुम्हहि होइ जाईं।' गोस्वामी तुलसीदास इस अवस्था को सन्तमत में शान्ति, स्थिरता वा निश्चिलता कहते हैं। शान्ति को जो प्राप्त कर लेते हैं, वे सन्त कहलाते हैं। इसमें शब्द और प्रतीति का कोई विकल्प नहीं रहता। अतः इसे निर्विकल्प समाधि कहते हैं।

सावनपुरिया

–श्री हरेराम प्रधान
वरिष्ठ लेखाकार

देव के घर पर उत्सव जैसा माहौल है। बच्चे कभी बाहर आते हें, तो फिर लौटकर घर के अन्दर चले जाते हैं। उलाहने भरे मन से मम्मी को पुकारते हैं और कहते हैं कि पापा को कब जाने दोगी। आंज देव को अपनी बहन और बुआ के घर 'सावनपुरिया' लेकर जाना है। सावनपुरिया की तैयारी एक सप्ताह से चल रही थी। रात को ही सारी तैयारियाँ पूरी हो गई थीं। बच्चों को इसकी जानकारी थी कि सबेरे पापा सावनपुरिया लेकर जायेंगे।

बच्चों को क्या पता था कि रात में मम्मी और पापा में सावनपुरिया ले जाने के प्रश्न पर काफी झगड़ा हुआ था। पापी पेट के सामने सभी बौने लगते हैं। देव समझदार व्यक्ति हैं। गांव में लोग उसे आज का 'श्रवण' कहते हैं। वह माता-पिता का आदर करता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है। वह सभी कठिनाइयों का सामना कर उनलोगों की इच्छा की पूर्ति करता है, परन्तु उसकी पत्नी का स्वभाव जरा उससे हट कर है। देव की पत्नी बीमा का इसी बात पर तकरार होता है। बीमा देव से कहती है कि हमलोग गरीब हैं। किसी तरह से दाल-रोटी चलती है, बच्चों को कपड़ा नहीं है। त्योहार आ रहा है। उनलोगों का कपड़ा खरीदना जरूरी है न कि सावनपुरिया ले जाना जरूरी है। आपकी बुआ बूढ़ी हो गई है, उनके लिए अब सावनपुरिया ले जाना जरूरी नहीं है। परन्तु देव बीमा की बातों में आने वाला नहीं है। वह तो आज का 'श्रवण कुमार' है। माता-पिता की आज्ञा है कि बेटा तुम्हें अपनी बुआ और बहन को सावनपुरिया पहुँचाना है, तो वह जरूर पहुँचायेगा।

पिछले चार-पांच महीने से देव उसी सावनपुरिया की तैयारी में जुटा हुआ था। देर रात तक काम से लौटना, और सुबह जल्दी काम पर चले जाना। यह देव की नियमित दिनचर्या हो गयी थी। देव का शरीर सूखकर काँटा जैसा हो गया था, न खाने की चिन्ता न सोने की चिन्ता। दिन-रात पैसा कमाने की धुन थी, ताकि किसी तरह से इस साल भी बुआ और बहन को सावनपुरिया का तोहफा भेंट कर आऊं। क्यों न करता? एक तो माता-पिता की आज्ञा दूसरा यह 'सावनपुरिया' साल में एक ही बार तो आती है। फिर अगले साल पता नहीं कौन बुआ या कौन बहन इस सावनपुरिया की सौगात लेने के लिए रह पायेगी अथवा नहीं। जबतक बुआ और बहन जिंदा हैं, तभी तक तो 'सावनपुरिया' की सौगात लेकर जाना पड़ता है; फिर इस साल तो काफी मेहनत कर पैसा जमा किया हूँ। बीमा की चुभन भरी बातों से देव काफी परेशान था।

उसकी खरी-खोटी बातें उसे साले जा रही थीं। उससे बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने बीमा से कहा कि जब तुम भी बुढ़िया हो जाओगी और तुम्हारे घर से कोई सावनपुरिया नहीं लायेगा तब तुम्हें कैसा लगेगा। इस पर बीमा चहकती हुई बोली कि मुझे क्यों नहीं सावनपुरिया आयेगी, माँ-बाप की मैं एकलौती बेटी जो हूँ। इस पर देव बोला कि जबतक तुम्हारे माँ-बाप जिन्दा हैं तभी तक तुम आशा करो कि सावनपुरिया आयेगी। माँ-बाप के स्वर्गवासी हो जाने के बाद किसका भाई-भौजाई इस सावनपुरिया सौगात को ढोता है, यह तुम और हम अच्छी तरह से देख रहे हैं। जहाँ तक हमारी बात है, हम तो गरीब हैं बचपन से यह बोझ बाबूजी हम पर डाले हुए हैं, इसलिए यह बोझ हम खुशी-खुशी ढो रहे हैं।

उधर देव की बहन की ससुराल में ननद और गोतिनी देव की बहन को ताना मार रही थी। इस साल भाई सावनपुरिया नहीं न लेकर आया। बाप कमाता नहीं है तो भला भाई को क्या पड़ी है कि वह बहन को सावनपुरिया का तोहफा लाकर दे दे। ताना सुन-सुनकर देव की बहन बीमार हो गई थी। देखने से लगता था कि वह अब नहीं बचेगी। एक तो गरीब दूसरा ऊपर से रोज-रोज का ताना उसे असह्य लग रहा था, जिसके चलते वह अन्दर ही अन्दर घुटन महसूस कर रही थी, जिसका उसके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ रहा था। फलतः वह बीमार हो गई थी। शाम होते-होते देव अपनी बहन के घर पहुँच गया। दूर से ही उसका भगीना उसे देखकर दौड़ते हुए घर के अन्दर गया और अपनी माँ से बोला कि माँ मामाजी आ रहे हैं और बड़ा थैला भी ला रहे हैं। भाई के आने की खबर सुनकर देव की बहन काफी खुश हुई उसे बिछावन से उठा नहीं जा रहा था, पर किसी तरह अपने को सम्भाल कर उठी और भाई के पैर पर गिरकर रोने लगी। देव ने उसे गले से लगाया और समझाया, पगली तुम क्यों निराश थी। जबतक तेरा भाई देव जिन्दा है, दुनिया की कोई ताकत तुझे सावनपुरिया की सौगात लेने से रोक नहीं सकती है। देख इस साल तुम्हारे लिए एक नहीं दो-दो साड़ियां लाया हूँ। यह कहते-कहते उसकी आंखों से आंसू की धारा बहने लगी। परन्तु भगवान को तो कुछ और ही मंजूर था। देव की बहन बेहोश होकर गिर पड़ी और उसका प्राणान्त हो गया। अब इस दुनिया में वह नहीं रही। अनायास देव के मुँह से निकल पड़ा बहना का यह अन्तिम 'सावनपुरिया' था। बहन के अन्तिम संस्कार के समय 'सावनपुरिया' में लायी गयीं दोनों साड़ियों से उसके शरीर को ढँक दिया गया। जीवन की इस दुःखद बेला में भाई-बहन का अमर प्यार बोल रहा था। मर्मान्तक पीड़ा की इस गहनतम घड़ी में सावनपुरिया की सौगात भाई-बहन के निःस्वार्थ प्रेम की मर्मस्पर्शी दास्तान है।

यात्रा-वृत्तान्त

–श्री शिव दयाल सिंह
स.ले.अधि.

भ्रमण करना मुझे अच्छा लगता है । बच्चे भी इसे पसन्द करते हैं । घूमते समय कुछ लोग साथ हों तो घूमने का आनन्द और बढ़ जाता है । परन्तु भ्रमण करते समय अन्य संगियों की सुविधा का अधिक ध्यान रखना पड़ता है । भ्रमण में पत्नी को साथ रखने से रास्ते में कम असुविधायें होती हैं । घूमने के लिए कार्यालय से अवकाश लेना पड़ता है । अवकाश उस समय लेना पड़ता है जिस समय अन्य घुमक्कड़ साथियों के स्कूल बन्द हों या उस समय उनकी परीक्षा अवधि नहीं पड़ रही हो । पत्नी को तो छुट्टी लेने की आवश्यकता नहीं थी । छोटे बच्चे को दस दिन के लिए स्कूल जाने से आसानी से रोका जा सकता था । अतः भारत भ्रमण योजना मेरी बड़ी बच्ची के इच्छानुसार दिसम्बर 2003 के प्रथम सप्ताह के लिए बनायी गयी ।

मुझे एवं मेरे परिवार को केन्द्रीय सरकार के द्वारा दी जाने वाली एल०टी०सी० सुविधा का लाभ प्राप्त करना था । मेरी सपरिवार यात्रा का कार्यक्रम पटना जंक्शन से प्रस्थान करते हुए हावड़ा, पुरी, तिरूपति, कन्याकुमारी, बंगलोर तथा सिकन्दराबाद होते हुए पटना वापसी का था । इस निमित्त मुझे सर्कुलर यात्रा टिकट हेतु चीफ टिकट सुपरवाइजर, पटना जंक्शन को आवेदन करना था । अतः पटना जंक्शन गया ।

पटना जंक्शन पर चीफ टिकट सुपरवाइजर से मिलना आसान काम नहीं था । पूछते-पूछते पता चला कि सीढ़ी की बगल में पुलिस बैठक है । पुलिस बैठक के अन्दर चीफ टिकट सुपरवाइजर बैठते हैं । मैं हिम्मत कर पुलिस बैठक के अन्दर हाथ में आवेदन-पत्र दिखाते हुए घुसा । एक पुलिस कर्मी ने ही बताया कि हाजत जैसे दिखने वाले घेरे के अन्दर बैठे हाकिम ही चीफ टिकट सुपरवाइजर हैं । उस छड़ लगे हुए घेरे में छड़ का ही जालीदार गेट था । गेट में ताला जड़ा हुआ था । चीफ टिकट सुपरवाइजर के सामने भी एक आदमी बैठे थे । ऐसा लगा वहाँ नोटों की गिनती भी होती है । मैंने अपना आवेदन पत्र सामने बैठे हुए उस आदमी को देते हुए कहा कि कृपया मुझे एक सर्कुलर जर्नी टिकट की आवश्यकता है । उसने मेरा आवेदन देखा और कहा कि दूसरा आवेदन-पत्र लायें । उसमें एक ही स्थान दो बार नहीं आने चाहिए और कुल आठ स्थानों से अधिक स्थानों को भी आवेदन-पत्र में नहीं दिखना चाहिए । मैं निरूत्साहित होकर वापस आ

गया और पुनः पूरी लगन से आवेदन-पत्र तैयार किया । इस आवेदन -पत्र को चीफ टिकट सुपरवाइजर के यहाँ रख लिया गया एवं मुझे एक सप्ताह बाद टिकट के लिए टिकट काउन्टर संख्या एक पर मिलने को कहा गया । मैं वापस आ गया । एक सप्ताह बीतने की प्रतीक्षा करने लगा ।

एक सप्ताह का समय बीत चला । अब मैं एक नम्बर के टिकट काउन्टर पर गया । वहाँ पूछा-साहब ! मेरा एक सर्कुलर जर्नी टिकट था । मैनें चीफ टिकट सुपरवाईजर के यहाँ एक आवेदन-पत्र एक सप्ताह पहले दिया था । कृपया देख लें कि वह आया है अथवा नहीं । उसने एक फाइल पलटनी शुरू कर दी । कुछ देर बाद वे बोले-हाँ, आ गया है । मैंने कहा- कितने पैसे लगेंगे ? उसने कहा-थोड़ी देर रूकिए । मैं रूक गया । वे अन्दर चले गए । थोड़ी देर बाद लौटे और बोले-कुल तेईस हजार एक सौ चौहतर रुपये लगेंगे । उस समय तक मैं एल०टी०सी० अग्रिम ले चुका था । दस दिनों के अन्दर कार्यालय को खरीदा गया टिकट दिखाना था । मैं एक रोज अकेले ही उतने पैसे लेकर स्टेशन की तरफ चल दिया था । रास्ते में एक सहकर्मी मिले । मैंने उनसे कहा-यदि घर जाने की जल्दी ना हो तो कृपया थोड़ी देर के लिए मेरे साथ चलिए । एक टिकट खरीदनी है । मेरे पास बीस हजार से ज्यादा रुपये हैं । वे मदद के लिए तैयार हो गए । वे मेरे साथ गए । उनके सामने ही मेरा सर्कुलर जर्नी टिकट संख्या 014008 दिनांक 23/10/2003 बना । मुझे कुल तेईस हजार एक सौ चौहत्तर रुपये देने पड़े । संयोग से मेरे सहकर्मी मेरे अनुभाग टी0ए0 19 के ही एक हठ्ठे-कठ्ठे नौ जवान श्री अनिल कुमार जी थे जिन्होंने मेरे पैसे की रखवाली अच्छे ढ़ंग से की । जब तक टिकट बनता रहा किसी अन्य को उस काउन्टर पर फटकने नहीं दिया । टिकट बनाने वाले बाबूने सुझाव दिया कि मैं अपनी यात्रा 45 दिनों के अन्दर पूरी कर लूँ एवं कम-से-कम एक गाड़ी का रिजर्वेशन 23.10.2003 की तारीख में ही अवश्य करा लूँ । उसी तिथि से 45 दिन की गणना की जाएगी । मैं शीघ्र ही ऊपरी तल्ले पर स्थित रिजर्वेशन काउन्टर की तरफ बढ़ा । रिजर्वेशन पर्ची लिया एवं भरा । प्रथम रिजर्वेशन टिकट 23.10.2003 को ही हाबड़ा-दानापुर एक्सप्रेस का लिया । टिकट नम्बर था- 25728159 । इसका पी एन आर नम्बर था- 633-3688507 । कुल रिजर्वेशन शुल्क मात्र एक सौ पचीस रूपये लगे । इतने कम पैसे लगे कि मैं आश्चर्य चकित रहा । इस आश्चर्य में और वृद्धि हुई । जब मैं पाया कि मुझे रिजर्वेशन टिकट प्राप्त हो रहे हैं और रिजर्वेशन शुक्ल शून्य लग रहा है । शून्य रिजर्वेशन टिकट का नम्बर था- 25757068 पी.एन.आर. संख्या 432- 6147773 कन्या कुमारी

बेंगलूर सीटी । 25757069 पी.एन.आर. संख्या 412- 6237055 बेंगलूर सीटी-काचेगुडा ।

यात्रा पर जाने से पहले टूरिस्ट कार्यालय सुदामा भवन पुराना बाईपास रोड से कुछ स्थानों के नक्शे मैंने प्राप्त किया ताकि उन स्थानों को नक्शे के मुताबिक आसानी से घूमा जा सके । इन दस दिनों के यात्रा के दरम्यान मैं दो स्थानों में होटलों में रूका एवं रातें बिताई । होटल ग्रीन प्लेस, कन्याकुमारी ने रूपये 350/- मात्र लिये जब कि होटल-दीप रेजोर्ट्स प्राइवेटलिमिटेड सीवीच रोड पुरी ने पॉच सौ रूपये लिए थे ।

नियत तिथि को गाड़ी ससमय पटना जक्शन से खुली । हम सब उस गाड़ी में सवार हुए । एक-दो घंटे बातचीत किए । खाना खाए और अपनी-अपनी सीटों पर सो गए । छोटा बच्चा अपनी सीट के अलावा सबकी सीट पर भी बारी-बारी से सो जाया करता था । सुबह होने पर गाड़ी पश्चिम बंगाल के इलाके में चल रही थी । खिड़कियों से हम सब बाहरी दुनिया को देखते हुए हाबड़ा जंक्शन पहुँच गए ।

हावड़ा पहुँचने के बाद अन्दर ग्राउण्ड रास्ते से स्टेशन परिसर से बाहर आये । वहाँ विभिन्न नम्बर की बसें लगी हुई थीं । कुछ कार वाले भी थे । ट्राम की सवारी भी वहाँ देखने को मिली । ट्राम रोड पर चलने वाली दो डब्बे की रेलगाड़ी होती है जो बिजली से चलती है । बगल में हुगली नदी एवं ऊपर दो भोंकला हावड़ा ब्रिज भी था । वहाँ के वाहन चालक बड़े ही अनुभवी पाये जाते हैं । एक जीप/कार काली-पीली को साठ रुपये में रिजर्ब किया और गन्तव्य तक गया । रास्ते में बड़ा-बाजार आया । रोड के दोनों तरफ फुट-पाथी दुकानदार देखें । उनमें कुछ मेरे ग्रामीण भी थे । मेरे कलकत्ता पहुँचने की सूचना मेरे हितैषी श्री-श्री साला-राम को लग चुकी थी । वे प्रतीक्षा में थें । वहाँ खाना खाया गया । स्नान-ध्यान हुआ । फिर उनकी जानकारी के स्थान काली मंदिर, बिड़ला म्यूजीयम, बिड़ला मंदिर आदि स्थानों पर गया, घूमा । एक भिजीटिंग प्लेस ऐसा था कि वहाँ जादू क्या है ? इसके वारे में समझाया जा रहा था । खान का दृष्य देखने को मिला । खान के अन्दर गाइड की मदद से अन्धेरे में घूमना अच्छा लगा । बिडला मंदिर शान्ति का स्थान लगा । वह उजले संगमरमर से बना हुआ था । उसके सामने आंगन में अच्छा-खासा स्थान था । साफ-सफाई की अच्छी व्यवस्था थी । छोटा बच्चा ने खाने की जिद की तो फोकचा दो रुपये में तीन के हिसाब से मिले । बच्चे को मंहगाई से कोई मतलब नहीं । खूब खाया । लगभग पन्द्रह रुपये खाया । सन्तोष था-घुमाना था घूमना यानी लुटाना । पैसे के अच्छे प्रबन्ध मैंने कर रखे थे । काली मंदिर में चारों तरफ गोलचक्कर लाइन थी । धीरे-धीरे आगे बढ़ा ।

चप्पल जूते बाहर थे । मंदिर के गेट के अन्दर एक स्पेशल रास्ता भी था जहाँ रुपये 150/- मात्र लेकर बिना लाइन के बिना भीड़-भड़के पंडे काली के दर्शन र्दशकों को एक छेद के मार्फत करा रहे थे । लगता है-साइड से काम करा लेने की परम्परा उसी मंदिर से लोगों ने सीखी । इस प्रकार घूमते-घूमते शाम हुई । रात हुई । कुछ खरीदारी भी हुई । पुनः टैक्सी रिजर्व कर स्टेशन के तरफ बढ़ा । वहाँ स्टेशन पर जगन्नाथ एक्सप्रेस हम सब की प्रतीक्षा कर रही थी । रिजर्वेशन चार्ट में हम सब अपना नाम देखें । फिर गाड़ी में सभी बैठ गयें । गाड़ी खुलने तक साला-राम एक अन्य सहयोगी के साथ मुझसे बाते करते रहे । ए. सी बोगी में खिड़की से बातें नहीं की जा सकती थीं । अतः बात-चीत करने भर गेट पर सामने नीचे खड़े रहे । गाड़ी पुरी के लिए रवाना हुई । हमलोगों ने एक-दूसरे का अभिवादन स्वीकार किया ।

सुबह हुई । गाड़ी एक स्थान पर खड़ी थी । वहाँ कुछ प्रचारक आये और कुछ कार्ड दिए और वे आगे बताये भी कि पुरी में से अमुक-अमुक होटल अच्छे हैं । इससे लग रहा था कि अब पुरी नजदीक ही है । गाड़ी पुरी पहुँची । स्टेशन से कुछ की दूरी पर समुद्र था । समन्दर के किनारे ही एक होटल में रूका । होटल के कमरे से जलधि को देखना, इसकी गर्जना सुनना सुगम था । समय बिना नुकसान किए जगन्नाथ मंदिर गए । घरवाली का पूजा-पाठ प्रारम्भ हो गया । मैं भी साथ रहा । बच्चे बाहर प्रतीक्षा करते रहे । इच्छा हुई तो अन्दर-बाहर भी किए । मंदिर में घंटा बजाया । अगरबत्ती जलाया । भगवान जगन्नाथ के दर्शन हुए । वहाँ मंदिर परिसर में भिखारियों की भरमार थी और वे भिक्षुक एक खास जाति-विशेष के लग रहे थे । ये दर्शकों को बता रहे थे कि उड़ीसा राज्य में गरीबी बहुत है । मंदिर में घुसने का रास्ता समतल नहीं था । वहाँ से कोर्णाक मंदिर गए । कोर्णाक मंदिर पर भी गाइड पाए गये । मंदिर का दरबाजा सदा के लिए बन्द किया हुआ पाया गया । रास्ते में समुद्र-तट पर एक बहुत ऊँचा लैम्प पोस्ट था । वह लैम्प पोस्ट रात्रि में भटके हुए पानी जहाजों का पथ-प्रदर्शक था । समुद्र का जल चखें, विल्कुल नमकीन था । इतना नमक होते हुए भारत में नमक आठ-से-दस रुपये किलो बिकता है । शाम में समुद्र-तट पर बालू पर खाना, बैठना, घूमना, ऊँट पर चढ़कर घूमना अच्छा लगा । समुद्री लहरों में स्नान करना खतरनाक लग रहा था । उतनी उँची उठने वाली लहरों के मध्य मछली मारनेवाली नौकाओं का चलना नाविकों के अदम्य साहस को दर्शाता था । होटल में रात बिताई गई । दूसरे दिन गाड़ी से तिरूपति के लिए हम सब चल पड़े । गाडी में टिकटों की गहन जांच हुई ।

रात भर गाड़ी में चलने के उपरान्त सुबह दस बजे तक तिरूपति हम सब पहुँच चुके थे । वहाँ एक ऐसा मंदिर था जिसके बीचो-बीच एक सड़क गुजरती थी । मंदिर के ऊपर सोने के सात गुम्बद लगे हुए थे । वहाँ अंगूर दस रूपये किलो के भाव से मिले । उसी समय आन्ध्रप्रदेश के चन्द्र बाबू नायडू पर जान लेवा हमला हुआ था । हमारी जीप की गहन जांच-पड़ताल की गई । सूटकेश खोलवाकर सामानों के उलट-पलटकर जांच की गई । यात्री इस जांच से परेशान रहे । घुमावदार सीढ़ियों (रोड) के सहारे जीप आगे बढ़ती हुई तिरूपति मंदिर पहुँची । घुमावदार रास्ते पर चलने में सिर में चक्कर-सा लग रहा था । मंदिर पर यात्रियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था शेड के रूप में भी थी । ऊपर से नीचे तक काले वस्त्र वाले श्रद्धालु भी वहाँ दिखें । मंदिर में बाल का चढ़ाना या वहाँ सिर मुड़ाने का रीति-रिवाज देखा गया । मंदिर में दर्शन के लिए स्टेशन पर ही रिजर्वेशन कराने की भी सुविधा है । उस मंदिर के पहाड़ के ऊपर रहने, उस पर जंगल का पाया जाना मनोहारी था । शाम में चार बजे कन्या कुमारी के लिए गाड़ी थी । गाड़ी पर चढ़ते-उतरते अबतक यह अभ्यास हो चुका था कि उँट के कुबड़ की तरह उठे हुए गाड़ी के डिब्बे ही हमारे हैं । गाड़ी समय से आई थी ।

रात भर गाड़ी चलती रही । सुबह हुई । केरला प्रदेश के झील, नारियल के पेड़ और धान की खेती नजर आ रही थी । उस गाड़ी में जो कम्बल ओढ़ने के लिए मिले थे वे काफी हल्के, मुलायम, पतले और गर्म थे । गाड़ी से उतरने के पहले कोच अटेन्डेण्ट ने बताया था कि आप सभी देर नहीं करेंगे और सबसे पहले विवेकानन्द रॉक के लिए टिकट ले लेगे । वह चार बजे शाम तक ही मिलती है । हम सब होटल में रूकने के बाद झट-पट टिकट लेने पहुँच गए । टिकट मिल भी गया । अन्दर के रास्ते से ही हमलोग स्टीमर पर चढ़ने चले गए । स्टीमर तामिलनाडु राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा चलाए जाते हैं । उस पर निगम कर्मचारियों की तैनाती थी । उन लोगों ने स्टीमर को खींचकर किनारे सटाए रखा । यात्री सवार हुए । करीब दो सौ यात्री एक ट्रीप में बिवेकानन्द रॉक पर छोड़े जा रहे थे । समुद्र की लहर इतनी तेज थी कि पानी के छींटे स्टीमर के ऊपर तक आ रहे थे । मुझे तो डर लग रहा था पर यात्रियों का हल्ला करना खुशियाँ भी प्रदान कर रही थी । पानी में विवेकानन्द की एक ऊँची मूर्त्ति भी नजर आ रही थी । वह मूर्त्ति 1984 में वहाँ नहीं थी । बाद में कभी बनाई गई थी । समुद्र के किनारे एक कैनोपी पुराना वाला ही थी । विवेकानन्द रॉक भी पुराना ही था । पानी में स्टीमर से चलते हुए दस से पन्द्रह मिनट बाद हम सब विवेकानन्द रॉक पर उतरे । उस पर ऊपर जाने के लिए

सीढ़ियाँ थीं । उस पर चबूतरे भी बनाए गए थे । हर स्थान पर बारीकेड लगाये गये थे ताकि यात्री दर्शक गलती से समुद्र में न गिर सकें । मंदिर में आधे घंटे तक हम सब बैठे अथवा घूमे । फिर दूसरे स्टीमर से वापस लाए गए । तब तक टिकट का कटना बन्द हो चुका था । समुद्री हवा तेज थी । उड़ते हुए वस्त्रों की फोटो ग्राफर ने फोटो ली । एवं इस फोटो को सात बजे शाम तक हम सबको दे दिया । वहाँ किनारे पर पानी की सप्लाई टंकी के आकार का एक मंच समुद्र में बना हुआ है । जिस पर सड़क का पहुँच मार्ग है । दर्शक उस पर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ सकते थे । सनराइज और सनसेट का दृश्य समुद्र में देख सकते थे । समुद्र का दूसरा किनारा दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था । यह कन्या कुमारी हमारे एल. टी. सी. का प्लेस ऑफ भीजिट था । 1984 में समुद्र में एक बड़ा पत्थर था । पर वर्ष 2003 में पानी में छोटे-छोटे बहुत से रॉक नजर आ रहे थे । ये समुद्र की लहरों को किनारे तक पहुँचने में बाधा उत्पन्न कर रहे थे । वहाँ की भाषा समझ में नहीं आती थी । एक बार घरवाली बोल उठी "इहाँ हमनी के भाषा सूनने वाला कोई नई खे" । तुरंत भीड़ से एक आदमी बोल उठा "काहे इहाँ राउर भाषा बूझे वाला कोई नइखे" । मैंने उनका परिचय पूछा । वे मेरे गांव वाले घर से 15 किलो मीटर दूर एकमा क्षेत्र के निकले । उसी एकमा क्षेत्र के बिहार के वर्त्तमान उद्योग मंत्री श्री गौतम सिंह हैं । वहाँ उत्तर भारत का खाना एक स्थान पर बहुत मुश्किल से मिला था वह भी होटल वाले के सहयोग से । होटल में ही सुबह हुई । होटल की छत से सनराइज देखना चाहते थे । पर बदली थी । गाड़ी का समय हो चला था । सनराइज का फोटो ग्राफ नहीं लिया जा सका ।

अगले दिन प्रभात में वापसी यात्रा कन्या कुमारी बेंगलूर एक्सप्रेस से प्रारंम्भ हुई । विज्ञान कितना आगे बढ़ गया हम सबने अपने-अपने छपाई किए हुए नाम, उम्र आदि विवरण रेलगाड़ी के डिब्बे पर वहाँ चिपके पाये । कन्या कुमारी से गाड़ियाँ विल्कुल ही कम यात्रियों/सवारियों को लेकर त्रिवेन्द्रम के तरफ प्रस्थान करती हैं वहाँ से चलते समय पूरे डिब्बे में हम ही सब पांच अपनी-अपनी सीटों पर थे । इसके आतिरिक्त एक सेवा-निवृत दम्पति भी थे जो डिब्बे के सूनेपन को टालने के लिए हम सबसे गप्पे लगा रहे थे । त्रिवेन्द्रम में डिब्बे में आदमियों की संख्या बढ़ गई । रात हुई । फिर दिन हुआ । गाड़ी बंगलोर पहुँची । बंगलोर स्टेशन स्वच्छ चमकता हुआ-सा था । स्टेशन की बार-बार धुलाई हो रही थी । रेलवे ट्रैक के तरफ मुँहकर कोई दुकान स्टेशन पर नहीं थी । एक बिस्कुट पैकेट लेने अथवा चाय पीने के लिए स्टेशन से बाहर निकलना पड़

रहा था । भारी सामानों को हम सब लगेज रूम में रख दिए । फिर टेम्पो रिजर्व कर एक पुराने सुल्तान के घर गए । वह ऊपर से नीचे तकह लकड़ी का बना हुआ था । वहाँ दर्शनीय स्थलों में था-बुल टेम्पल, बिड़ला मदिंर, मशीनरी हाउस, स्वास्थ्य म्यूजियम आदि । बुल टेम्पुल पर साँढ़ की एक मूर्त्ति है । बिड़ला मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर है । उसमें एक तरफ साई बाबा की मूर्त्ति अलग लगी थी । जहाँ उपासक घंटो बैठते एवं बाबा के सम्मुख नतमस्तक हो रहे थे । मशीनरी हाऊस चार तल्ले की बिल्डिंग है । जिसमें विज्ञान से सम्बन्धित प्रदर्शन लगे हुए थे । प्रिय दर्शनी सोप सिल्क के सामानों के लिए सरकारी दूकानें थीं जो समय से खुलती एवं बंद होती थीं । उन्हें दो पहर में भी बन्द किया जाता है । स्वास्थ्य म्यूजियम में ऐसे-ऐसे प्रदर्शन लगे हुए थे जिन्हें देखकर शरीर के अंततरंगों की बनावट एवं उनके विभिन्न काम समझे जा सकते थे ।

शाम में हम सब हैदराबाद के लिए गाड़ी पकड़ लिए । काचेगुडा पांच बजे सुबह में हम सब पहुँच चुके थे । काचेगुडा से सिकन्दराबाद टेम्पो से आ जाया गया । सिकन्दराबाद में टूरिज्म डिपार्टमेंट का एक कार्यालय था । उसने ओल्ड सिटी अर्थात् हैदराबाद के मुस्लिम बहुल इलाके में जाने से मना किया । क्योंकि वहाँ कर्फ्यू चल रहा था । शहर के मध्य हुसैन सागर झील है । उस झील की परिधि लगभग तीन से चार किलोमीटर की है । उसके मध्य एक भीजीटिंग स्पौट बना हुआ है । जिसपर स्टीमर से दर्शक जाते एवं वापस आते हैं । एन.टी. रामाराव का गार्डेन अंधेरे में दर्शनीय स्थल है । उसमें एक प्रदर्शन ऐसा था । जिसपर छोटे-छोटे बच्चों के चढ़ने के लिए सीढ़ियों के स्टेप्स बने हुए थे । प्रदर्शन एक टावर/मिनार था । जिसमें अन्दर से हवा भरी हुई थी । बच्चे उसपर ऊपर चढ़ जाया करते थे । कुछ बच्चे जो ऊपर से उतर नहीं पाते थे । वे सहायता के लिए रोते हुए गिर जाया करते थे । परन्तु उन्हें गद्दीदार मंच पर कोई चोट नहीं आती थी । बच्चों के लिए बने प्रदर्शन का उपयोग सयाने नहीं कर सकते थे । इस तरह का एक प्रदेश सहरसा जिला मुख्यालय में भी है । बच्चों के चढ़ने के लिए घोड़े थे । हम चार आदमी चारो तरफ खड़े हो गये ताकि बेटे सत्यपाल सिंह को कोई डर न लगे । जहाँ भी बाहर देखें अपने आदमी नजर आयें । गोलकुण्डा फोर्ट भी हम सब गए थे । फोर्ट की पहचान चारो तरफ ऊँची-ऊँची लाल रंग की दीवारों से होती है । किला में घुसने का गेट प्रारम्भ में गली जैसा था । परन्तु अन्दर बहुत बड़ा गेट था । घोड़ों के रखने के लिए अलग-अलग अस्तबल थे । सैनिकों को रहने के लिए अलग-अलग बहुत से बैरक थे । कैदियों को रखने के लिए अन्दर ही कैदखाना था । भोजन सामग्री

रखने के लिए अलग-अलग बड़े-बड़े कमरे थें । राजा के रहने का कमरा सब के ऊपर पहाड़ी पर था । पहाड़ी पर चढ़ने के लिए दो मार्ग थे । एक सीढ़िनुमा एवं दूसरा रोड/वहाँ विदेशी पर्यटक भी देखे गए । वहाँ से थोड़ी दूर हटकर गोलकुण्डा टॉम्ब था । टाम्ब मरे हुए मुस्लिम राजाओं का मंदिरनुमा मकबरा है । प्रत्येक मकबरा करीब चार से छः कठ्ठा जमीन पर बने हुए थे । मकबरे के चारों तरफ दरवाजे थे । परन्तु पश्चिम दिशा में खुलने वाले कोई दरवाजे नहीं थे । मन्दिर के बीच में एक अथवा दो मकबरे थे । ऐसे बड़े-बड़े करीब दस या पन्द्रह मकबरे वहाँ अलग-अलग बने हुए हैं । यह एक दर्शनीय स्थल है । अन्दर प्रवेश के लिए टिकट लगते हैं । टॉम्ब के अन्दर बाग-बगीचे भी हैं । यह सब स्थल यात्रा के अन्तिम चरण के थें । वहाँ से दस बजे रात्रि के आस-पास ट्रेन हम सबको लेकर पटना के लिए प्रस्थान कर गई । गाड़ी नागपुर, इटारसी, जबलपुर होते हुए तीसरे दिन पटना वापस आ गई । बोगी ए.सी रहने के कारण दिन में कभी पसीना का सामना नहीं करना पड़ा । घूमने में दस हजार रुपये का अतिरिक्त खर्च आया था । भारत भ्रमण का वह दिन पुनः आये–ऐसी इच्छा बनी हुई है ।

नेताजी

–श्री पंकज कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

नेताजी परेशान थे पढ़कर रोज अखबार
क्या दैनिक को नहीं सूझता अन्य कोई समाचार
सचिवालय के सामने धरने पर बैठे हैं कुछ छात्र,
लेकर बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ, बाँधते हैं शास्त्रास्त्र
कहते हैं कुछ काम दो नहीं तो ले लो जान,
मुश्किल है इस दुनिया में जीना बनकर इंसान ।
एक सप्ताह हो गए पर नेताजी का ना हुआ पूरा अरमान
नित्य रोज छपता रहा इन अक्खड़ों, नामसझों की जिंदगी-ए-दास्तान
पत्रकारों को बुलवाया, समझाया, कितनी महत्वपूर्ण खबरों से रह जाती है जनता अनजान,
अब तो लिखना छोड़ दो, इन बेमुरव्वतों की क्या है समाज में पहचान ।
रिपोर्टर भी थे अड़ गए क्योंकि कुछ संबंधी उनके भी थे फँसे,
सफाई दी, न लिखा तो विपक्षी नेता और जनता मिलकर करेगी हमारी नींद हराम ।
अत: अब रहेगा प्रथम की जगह अंतिम पृष्ठ का अंतिम भाग इन निठल्लुओं के नाम ।
नेताजी आखिर हारे, सोचे अब तो देना होगा कुछ समय धरने के नाम ।
क्योंकि विपक्षी नेताओं की रोज-रोज की बंदर घुड़कियाँ, करती है परेशानी का इंतजाम ।
भेज दी रिपोर्टरों को निमंत्रण कहा धरने पर पहुँचने का समय होगा कल सूर्य-अवसान,
नेताजी थे पहुँचे और उनकी जय-जयकारों से हो रहा था वातावरण गुंजायमान ।
पर धरने पर बैठे छात्रों को पता था होंगा वही जो पुरखों ने कहा है
जो भौंकते हैं वे काटते नहीं स्वान ।
नेताजी शुरू हुए, हमदर्दी जतायी कहा अब बहुत हो गया आप सबों का अपमान ।
अब मैं आपके पास हूँ, साथ हूँ करने को पूरा आपके दिलों का अरमान ।
यह जो अपना देश है, अब परतंत्र नहीं स्वतंत्र है ।
यहाँ भीड़तंत्र नहीं लोकतंत्र है ।

हम साम्यवाद, समाजवाद या पूँजीवाद नहीं,
गाँधीवाद के पुजारी हैं ।
तभी तो आपके धरने का कार्यक्रम बेरोकटोक जारी है ।
आपकी माँग एक सौ दस फीसदी जायज है,
पर सरकार की भी अपनी कवायद है ।
कर दी एक कमिटि बनाने की घोषणा
और धरणार्थियों को पिलाया गन्ने, संतरे का जूस ।
बेचारे निखट्टुओं को समझ न आया,
नेताजी के सब्जबाग देखकर थे वे बहुत खुश ।
छः महीने बीत गए चुनाव का समय आया, साथ-साथ कमिटि की रिपोर्ट भी आयी ।
नेताजी ने गर्व से दैनिकों में इश्तहार छपवाई और घोषणा करवाई ।
यह कैसी परिस्थिति है, रिपोर्ट आते ही चुनाव की घोषित तिथि है ।
कमिटि की रिपोर्ट का कार्यान्वयन तो तय है,
पर अभी चुनाव-संहिता का डर है ।
है मेरा पक्का इरादा, गरीबी, बेरोजगारी के समूल नाश का वादा ।
बेचारे बेरोजगारों की शामत थी,
न चाहते हुए भी झूठी दिलासा दिल को देने की आदत थी ।
नेताजी खुश थे सोच रहे थे अगर इस घोषणा से भी कुछ नासमझों को समझ न आयी
तो फिर चुनाव के वक्त होगी उनकी रूई-सी धुनाई ।
सारे बूथ पे तो अपने गुर्गे हैं ।
एक, दो नहीं, पूरे सात चुनाव लगातार जीतने के तजुरवे हैं ।

रामचरितमानस में विज्ञान

–श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखाकार

रामचरितमानस हिन्दी महाकाव्यरूपी पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर है। यह हिन्दी महाकाव्यों की पुष्प माला का प्रधान पुष्प है। गोस्वामी तुलसीदास का अध्ययन काफी विस्तृत था। किसी कवि की भावनाएँ, उसका ज्ञान और अनुभव उसकी रचनाओं में स्पष्ट दीख पड़ता है। यही कारण है कि रामचरितमानस की सीमाएँ बहुत विस्तृत हैं। यह इतना व्यापक है कि सामान्य जन से लेकर महापण्डित तक इसे पढ़ते हैं और समान आनन्द, ज्ञान एवं तथ्यों की प्राप्ति करते हैं। इसमें धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, कूटनीति, दर्शनशास्त्र, विज्ञान इत्यादि अनेक विषयों के तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं। इस निबंध में मैंने रामचरितमानस के कुछ दोहों, चौपाइयों और छंदों में प्रतिबिम्बित वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया है।

प्रथम चौपाई बालकाण्ड से उद्गृहीत है। जब धनुषभंग के पश्चात् परशुराम जी क्रोधित होकर आते हैं और राम का बड़प्पन जानकर उनकी स्तुति करते हैं:-

जय रघुबंस बनज बन भानू।
गहन दनुज कुल दहन कृसानू॥

अर्थ: हे रघुवंश रूपी वन तथा उसमें जन्मलेने वाले जीवों के लिए सूर्य और उसे क्षति पहुँचानेवाले राक्षसों के लिए अग्नि! आपकी जय हो।

वैज्ञानिक तथ्य : हम जानते हैं कि जंगल के पेड़-पौधे सूर्य से ही जीवन पाते हैं। प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया द्वारा वे सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में ही अपने भोजन का निर्माण करते हैं। सूर्य-प्रकाश कीटणुनाशी होता है। यह हानिकारक बैक्टीरिया को मार डालता है। अत: यह पेड़-पौधों के लिए हानिकारक कवक तथा जीवाणु को मार कर उनकी रक्षा करता है। क्या राम का सूर्य, रघुंवश को वन, इसमें जन्म लेनेवालों को वनज तथा रघुवंश को क्षति पहुँचानेवालों को दनुज की संज्ञा देकर गोस्वामीजी ने अपनी वैज्ञानिक दृष्टि का परिचय नहीं दिया है ?

द्वितीय दोहा भी बालकाण्ड से है:-

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ।
रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन विधि होई॥

यह दोहा राम के जन्म के समय का है । शब्दार्थ यह कि राम जन्म के समय एक दिन एक माह के बराबर हो गया । इस रहस्य को कोई नहीं जानता । सूर्य अपने रथ सहित वही रूक गये, फिर रात किस तरह होती ।

वैज्ञानिक तथ्य: कुछ लोग इसे असंभव मानते हैं कि एक दिन एक माह के बराबर नहीं हो सकता । परन्तु इसे आइंस्टीन के सापेक्षिता सिद्धांत एवं लॉरेन्ट्स के काल विस्तार सिद्धांत के परि प्रेक्ष्य में समझा जा सकता है ।

सापेक्षिकता सिद्धांत के अनुसार विश्व की सम्पूर्ण घटनाएँ एक-दूसरों के सापेक्ष हैं । काल विस्तार सिद्धांत के अनुसार, एक ही घटना का समय दो विभिन्न सन्दर्भ विभाओं के सापेक्ष अलग-अलग हो जाएगा । तदनुसार राम के जन्म-दिन की लैम्बाई सूर्य के सापेक्ष एक माह थी जबकि पृथ्वी के सापेक्ष वह एक दिन थी । इस तरह उपर्युक्त दोहा दो वैज्ञानिक तथ्यों को समाहित किए हुए है ।

अगली दो चौपाइयाँ भी बालकाण्ड से हैं । प्रसंग श्री राम एवं उनके भाइयों के विवाह का है ।

रूचि रूचि जीन तुरग तिन्ह साने ।
बरन बरन बर बाजि बिराजे ॥

सुलग सकल सुठि चंचल करनी ।
अय इव जरत धरत पग धरनी ॥

अर्थ: चारों भाइयों के विवाह में साहनियों (घुड़साल के अध्यक्ष) ने रूचि के साथ (यथा योग्य) जीनें कसकर घोड़े सजाये । रंग-रंग के उत्तम घोड़े शोभित हो गए । सभी घोड़े बड़े ही सुन्दर, मजबूत एवं तेज हैं । जब वे अपना टाप धरती पर रखते हैं पृथ्वी गर्म हो जाती है और जलने लगती है ।

वैज्ञानिक तथ्य: इन चौपाईयों में हम ऊर्जा संरक्षण को देखते हैं । घोड़ों की चाल और उनके पैरों की गति इतनी तेज है कि जब वे अपना पैर धरती पर रखते हैं, धरती गर्म हो जाती है । पैर धरती पर रखने के बाद उनकी गतिज ऊर्जा ऊष्मा ऊर्जा में रूपान्तरित हो जाती है । पैरों की गति पृथ्वी पर रखने के बाद शून्य हो जाती है । अत: उनकी गतिज ऊर्जा शून्य हो जाती है जिसके कारण उनके टापों के सम्पर्क की धरती गर्म हो जाती है और अग्नि उत्पन्न होती है ।

निम्नलिखित दो चौपाइयाँ भी बालकाण्ड से उद्धृत हैं :

साँव करन अगनित हय होते ।
तो तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं ।
टाप न बूड़ बेग अधिकाई ॥

अर्थ: अनगिनत श्यामकर्ण घोड़े थे । उनको सारथियों ने उन रथों में जोत दिया है । ये घोड़े जल पर भी जमीन की तरह ही चलते हैं । वेग की अधिकता से उनके टाप पानी में नहीं डूबते ।

वैज्ञानिक तथ्य: पानी पर चलना असंभव प्रतीत होता है लेकिन यह संभव है । हम जानते हैं वृत्तीय गति करते एक पिण्ड की गति के कारण अपकेन्द्र बल उत्पन्न होता है । चूँकि पृथ्वी गोल है इसलिए उसकी सतह पर घोड़ों की गति वृत्तीय गति हो जाएगी और अपकेन्द्र बल उत्पन्न हो जाएगा । घोड़ों की तेज गति के कारण अपकेन्द्र बल ऊपर की ओर और गुरूत्वाकर्षण बल नीचे की ओर कार्य करते हैं । इन दोनों बलों के संतुलन की स्थिति में घोड़े जल पर दौड़ सकते हैं ।

अब बालकाण्ड से ही उद्धृत एक अन्य चौपाई पर विचार करते हैं । प्रसंग धनुष-भंग का है ।

निज जड़ता लोगन्ह पर डाढ़ी ।
होई हरूअ रघु पतिहि निहारी ॥

धनुषभंग के समय सीताजी धनुष से प्रार्थना करती हैं-

हे धनुष । तुम अपनी जड़ता लोगों पर डालकर, श्री रघुनाथजी के सुकुमार शरीर को देखकर उतने ही हल्के हो जाओ ।

वैज्ञानिक तथ्य-उपर्युक्त चौपाई में एक शब्द जड़ता आया है जिसका अर्थ है जड़त्व अर्थात् किसी वस्तु की प्रारंभिक अवस्था में बने रहने की प्रवृत्ति । सीताजी धनुष से अपना जड़त्व लोगों पर डालकर राम की शक्ति के अनुरूप हल्का होने की प्रार्थना करती हैं । तात्पर्य यह कि धनुष में जड़त्व का गुण था । और हम जानते हैं कि धनुष में जड़त्व का गुण था जिसके चलते कितना भी बल लगाने पर वह अपने स्थान से नहीं हिल पा रहा था । यह वही जड़त्व है जो हम आज विज्ञान में न्यूटन की गति के प्रथम नियम के तहत पढ़ते हैं ।

अगली दो चौपाईयाँ भी बालकाण्ड से ही है :

जौ तुम्हारी अनुसासन पावौ ।
कंदुक इव ब्रहमाण्ड उठावौ ॥
काये घट जिमि डारौं फोरी ।
सकउँ मेरू मूलक जिमि तोरी ॥

अर्थ: प्रथम चौपाई में लक्ष्मण कहते हैं यदि आपकी (राम की) आज्ञा पाऊँ, तो मैं ब्रहमाण्ड (पृथ्वी) गेंद की तरह उठा लूँ ।

द्वितीय चौपाई में लक्ष्मण कहते हैं कि मैं पृथ्वी को कच्चे घड़े की तरह फोड़ डालूँ । मैं सुमेरू पर्वत को मूली की तरह तोड़ सकता हूँ ।

वैज्ञानिक तथ्य: इन दोनों चौपाइयों से स्पष्ट है कि तुलसीदास इस सिद्धांत को स्वीकारते हैं कि पृथ्वी गोल है । आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व जब वैज्ञानिक सिद्धांत इतने लोकप्रिय नहीं थे, पृथ्वी को गोल मानकर तुलसीदास ने अपनी वैज्ञानिक दृष्टि का ही परिचय दिया है । वे अंधविश्वास के स्थान पर वैज्ञानिकता के समर्थक थे ।

अधोलिखित छन्द अयोध्याकाण्ड से हैं-

तुलसी कृपा रघुवंसमनि की लोह लौ लोका तिरा ।

तात्पर्य यह कि श्री राम की कृपा से पानी में लोहा नौका को अपने ऊपर लेकर तैर सकता है ।

यदि हम ईश्वर की ऊर्जा मानें तो इस पंक्ति में निम्नलिखित वैज्ञानिक तथ्य निहित है- लोहा का पानी में तैरना जल की पृष्ठ ऊर्जा एवं पृष्ठ तनाव के कारण होता है ।

नवीं चौपाई अयोध्या काण्ड से है:-

फरइ कि कोदन बालि सुसाली ।
मुकता प्रसव कि संवुक ताली ॥

अर्थ: क्या कोदो धान की बाली पैदा कर सकता है? क्या तालाब का घोंघा मोती उत्पन्न कर सकता है?

प्रसंग राम के वनवास के उपरान्त भरत के चित्रकुट आगमन और उनके द्वारा पश्चाताप व्यक्त करने का है । पश्चाताप करते हुए भरत कहते हैं कि जिस तरह कोदो अच्छे धान की बाली पैदा नहीं कर सकता, तालाब का घोंघा मोती पैदा नहीं कर सकता, उसी तरह वे कैकयी का पुत्र होने के कारण अच्छा व्यक्ति नहीं हो सकते ।

वैज्ञानिक तथ्य: इस चौपाई में हम आनुवंशिकता के सिद्धांत की झलक पाते हैं । संतान में, शारीरिक बनाबट, गुण-अवगुण, आहार-व्यवहार माता-पिता से ही आते हैं । कोशिकाओं के गुणसूत्र आनुवंशिक गुणों के वाहक होते हैं जिसके कारण सभी जीव समान गुणधर्मी संतान की उत्पत्ति करते हैं । अत: कोदों धान की बाली उत्पन्न नहीं कर सकता तथा तालाब का घोंघा मोती उत्पन्न नहीं कर सकता । मोती समुद्री सीप ही उत्पन्न कर सकता है ।

दसवीं चौपाई लंका काण्ड से है:

सब तरू फरे राम हित लागी ।
रितु अरू कुरितु काल गति त्यागी ॥

जब श्री रामचन्द्र जी लंका में पहुँचे उनके लिए सभी पेड़-पौधे फलों से लद गए बिना ऋतु का विचार किए ही । यह एक प्राकृतिक सत्य है कि कोई भी पौधा एक खास ऋतु में ही फूल या फल देता है । बिना खास ऋतु के फल-फूल पैदा करना असंभव जान पड़ता है पर इसे वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित किया जा सकता है ।

वैज्ञानिक-तथ्य-आज जैव-प्रौद्योगिकी की मदद से मानव ने विभिन्न पेड़-पौधों की अनेक ऐसी जातियाँ विकसित की हैं जो सालों भर फल-फूल पैदा करते हैं । आम, टमाटर, हरी मिर्च, गोभी, मटर इत्यादि अनेक वनस्पतियाँ सभी ऋतुओं में उपलब्ध होती हैं । अत: किसी भी ऋतु में फल पैदा करना संभव है । हो सकता है उन दिनों श्री राम के अनुचरों के पास ऐसी प्रौद्योगिकी हो और वे सालों भर फल पैदा करते हों ।

11वीं चौपाई उत्तर काण्ड से है:

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई ।
कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥

इस चौपाई के अनुसार जल बिना थल के नहीं रह सकता । पृथ्वी पर हम जल को थल से घिरा हुआ पाते हैं । परन्तु वर्षा की बूँदें हवा में तैरती हैं । क्या वहाँ स्थल विद्यमान हैं ?

आकाश में वर्षा की बूँदों के निर्माण में भी धूलकणों की आवश्यकता पड़ती है । आकाश में वाष्प कणों का सघनन धूलकणों पर ही होता है जिन्हें संधनन-केन्द्र कहा जाता है ।

यदि वातावरण के धूलकण विद्यमान न रहे तो वाष्पकणों का संघनन नहीं हो सकेगा । फलत: बादल का निर्माण असंभव हो जाएगा ।

इस निबंध की अंतिम चौपाई भी उत्तर काण्ड से ही है:

राम सिंधु घन सज्जन धीरा ।
चन्दन तरू हरि संत समीरा ॥

अर्थ: भगवान श्री राम समुद्र हैं और संतगण बादल हैं । राम चंदन वृक्ष के समान है और संतगण वायु के समान हैं ।

वैज्ञानिक तथ्य-प्रथम पंक्ति में हम बादलों के निर्माण की प्रक्रिया की झलक पाते हैं । संत राम पर उसी तरह निर्भर हैं जिस तरह बादल समुद्र पर । जब समुद्र का जल वाष्पीकृत होता है तो वायुमंडलीय आर्द्रता में वृद्धि होती है । वायुमंडलीय आर्द्रता का संघनन ही बादलों का निर्माण करता है । इस तरह यह चौपाई बादलों के निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है ।

बादलों के कारण ही वर्षा होती है और पौधों में नव जीवन का संचार होता है । वे खुशी से झूमने लगते हैं । इसी तरह संतगण भक्ति का प्रचार करते हैं और लोग भक्तिधारा का रसपान कर आह्लादित हो जाते हैं ।

यद्यपि हम रामचरितमानस में वैज्ञानिक दृष्टि की झलक पाते हैं परन्तु हम तुलसीदास को वैज्ञानिक नहीं कह सकते । फिर भी हमें यह कहने में हिचक नहीं होगी कि तुलसीदास को बहुत-से वैज्ञानिक तथ्यों की पूर्ण संकल्पना थी और उन्होंने इन तथ्यों को स्वीकार किया था । उन्होंने न केवल धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया था वरन वैज्ञानिक पुस्तकों से भी ज्ञान अर्जित किया था । उन्हें बहुत से वैज्ञानिक तथ्यों की संकल्पना प्राप्त थी जिन्हें यथास्थान दोहों, छंदों और चौपाइयों में समावेशित कर वे अंधविश्वास का विरोध करते प्रतीत होते हैं । जय श्री राम !

सर्दी-जुकाम के फायदे

–श्री श्रीराम पांडेय
वरिष्ठ लेखाकार

आदरणीय पाठकजी, शीर्षक पढ़कर आप मुझे सनकी समझने की भूल कदापि न करें (यदि ऐसा होता तो राँची के काँके मन: चिकित्सालय में मैं आरोग्यप्रद दवा ले रहा होता, न कि लेखनी घिसकर आपका बहुमूल्य समय नष्ट करता) क्योंकि सर्दी, नजला और जुकाम के जो फायदे मैं आपको बताने जा रहा हूँ उसे पढ़कर आप दाँतों तले अंगुली ही नहीं, बल्कि पूरा पंजा दबा लेंगे । एक बात मैं स्पष्ट कर दूँ कि आप इन बीमारियों से लाभ तभी उठा पायेंगे जब तीन शर्तो में से कम-से-कम एक को भी पूरा करने की क्षमता रखते हों । ये शर्ते है (क) आप एक पति हों (क्षमा करें, हमारी पाठिकाओं को इससे कोई लाभ नहीं मिलेगा, यदि वे किसी की पत्नी हैं । हाँ, अनब्याहियों को तो इन तुच्छ लाभों की आवश्यकता ही नहीं, बिन मांगे सबकुछ पा सकती हैं), (ख) किसी शासकीय कार्यालय में सेवारत हों (ग) बहुत सारे नहीं तो कम-से-कम दो तीन मित्र अवश्य हों ।

आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जुकाम से मौत तो नहीं होती है । थोड़ा-सा कष्ट हो सकता है, परन्तु इससे मिलने वाले लाभ आपके सारे कष्टों को नौ दो ग्यारह कर देंगे । तो आइये, देखें आपको क्या-क्या लाभ हो सकता है:-

(क) यदि आपकी पत्नी सुबह चाय बनाने में कष्ट का अनुभव करती हैं तो बस छींकते खांसते हुए उनके चारों ओर परिक्रमा लगाना आरंभ कर दें । सच मानिये, क्षणमात्र में कड़कदार चाय की प्याली आपके मेज पर बिराजमान होगी । आपकी पत्नी को यह भलिभाँति ज्ञात है कि जुकाम संक्रामक बीमारी (मित्र आप इसे किंचितमात्र भी बीमारी न समझें) है और यदि आप ठीक नहीं होंगे तो वह भी इसकी चपेट में आ जायेंगी । कड़कदार चाय से यह बीमारी ठीक हो सकती है, यह भी उन्हें मालूम है । इतना ही नहीं, यदि आपको सुबह का भोजन रात को या रात का सुबह मिलता हो तो वह बंद हो जायेगा और गरामगरम भोजन मिलने लगेगा । तले हुए, कुरकुरे और खस्ता व्यंजन आपके प्लेट को सुशोभित करते रहेंगे । ऐसा तबतक होगा, जबतक आप पूरी तरह स्वस्थ न हो जायेंगे (भगवान न करें कि आप स्वस्थ हों) ।

(ख) यदि आप कल्पनाशील प्रकृति के हैं तब तो कहना ही क्या, साधारण भोजन भी आपको लजीज पकवान जैसा लगेगा । सर्दी जुकाम में जिह्वा की स्वादग्रंथी शिथिल पड़ जाती है । नमकीन भोजन मिले तो आप उसे समोसे-कचौड़ियाँ समझकर खायें । मीठा व्यंजन हो तब तो कहना ही क्या, अपनी

मनपसंद मिठाई मानकर उदरस्थ करते जायें । अमरूद को सेव समझकर खायें (अमरूद, केला जैसा फल नियमित रूप से खायें, क्योंकि इससे सर्दी छुटेगी नहीं और अधिक समय तक आप इसका लाभ प्राप्त करते रहेंगे) ।

(ग) यदि आप अतिव्ययी हैं तो कम-से-कम कुछ मामलों में सर्दी-जुकाम के फलस्वरूप इसमें कमी आयेगी । आपको सुगंधित परफ्यूम, तेल-फुलैल आदि लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । इस अवस्था (अवस्था को अस्वस्थता कतई न समझें)में केरोसिन लगाकर आप परफ्यूम होने का भ्रम पाल सकते हैं । दूसरों को इससे कष्ट हो सकता है परन्तु आपको क्या ? यही तो आप चाहते हैं । आपकी श्रीमतीजी को इससे क्षणिक लाभ पहुँच सकता है । उनके श्रृंगारिक प्रसाधनों का आप उपयोग नहीं कर पायेंगे । परन्तु इसका आर्थिक लाभ तो आपको ही मिलेगा ।

(घ) आपके कार्यालय के अधिकारी यदि अवकाश देने में कंजूसी दिखाते हैं तो आप जुकाम महाशय की मद्द ले सकते हैं । बस इतना ही करना है, अधिकारी महोदय को यह आभास करा दें कि आप नजला-जुकाम से ग्रसित हैं । हो सके तो एक-दो छींक भी मार दें । सत्य मानिये, बिना आवेदन के आपका अवकाश स्वीकृत हो जायेगा । आप तबतक कार्यालय जाने से बचे रहेंगे जबतक उन्हें (अधिकारी महाशय को) ज्ञात रहेगा कि आप अभी जुकाम से उबरे नहीं हैं ।

(ङ) यूँ तो मित्रों का होना दुर्भाग्य से कम नहीं, परन्तु आपका जुकाम इसे सौभाग्य में परिणत कर सकता है । आपके मित्र प्राय: आपके घर में अड्डा जमाये रहते होंगे और आपके घर पर आटा गीला करने के जुगत में लगे रहते होंगे । इतना ही नहीं, आपकी सुंदर-सुघड़ अर्धांगिनी की सुंदरता का चक्षुपान करना ही अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते होंगे । कहिये, आपकी दुखती रग को पकड़ लिया न मैंने । किन्तु रग पकड़ने से क्या होगा, यदि इसका समाधान न किया जाय । जब आप मुझे इतनी तन्मयता से पढ़े जा रहे हैं (जबकि कवि-लेखकों को तो अब भाड़े के पाठक भी नहीं मिलते हैं) तो मेरा भी यह कर्तव्य बनता है कि आपकी समस्या के निवारण हेतु कुछ सोचूं । अजी सोचना क्या है, वही सर्दी-जुकाम को शिखण्डी बनाइये और सभी भीष्मों (मित्रों) के आगे ढ़ाल के रूप में प्रस्तुत कर दीजिये । आपके मित्रों को अकस्मात कोई न कोई काम याद आ जायेगा और गदहे के सींग की तरह गायब हो जायेंगे । उनके अतिथ्य सत्कार से आपको मुक्ति मिल जायेगी ।

मेरा मनोविज्ञान यह बता रहा है कि आपको डॉक्टर और रोगी का वह चुटकला स्मरण हो आया होगा जिसमें डॉक्टर जुकाम

के रोगी को गंदे और ठंढे जलाशय में स्नान करने की सलाह देता है, ताकि उसका रोग और विकट रूप धारण कर ले तथा डॉक्टर को इलाज करने में आसानी हो। मैं यह भी अनुभव कर रहा हूँ कि अब आप इसे चुटकला कदापि नहीं मान रहे होंगे और आवश्यकता पड़ने पर (सर्दी-जुकाम पूरी तरह आपको ग्रसित न कर पाया हो) आप इसे अमल में भी ला सकते हैं।

लगता है अब मैं नहीं लिख पाऊँगा। इसके दो कारण हैं (आपको ज्ञात होगा कि प्रत्येक बात के पीछे दो कारण होते हैं)। पहला कारण यह है कि मेरी शंकालु पत्नी इस लेख को मेरा प्रेम-पत्र (किसी अन्य महिला के लिए) समझकर कहीं मुझसे लेकर पढ़ न ले। यदि वह इसे पढ़ लेगी तब तो मेरे सारे किये कराये पर पानी फिर जायेगा। दूसरा कारण है, अभी मुझे सर्दी हो गई है (मित्र इस पचड़े में कदापि न पड़ें कि सही मायने सर्दी हुई भी है या नहीं) और इस खुशी के मौके पर मेरी कुशाग्र बुद्धि पत्नी मुझे अदरख वाली चाय अवश्य पिलायेगी।

चेतावनी-(1) लोगों को यह आभास कभी न होने दें कि आपने चिकेन खाया है और हो सकता है आपको बर्डफ्लू हो गया हो। क्योंकि तब आपके समीप कोई फटकेगा तक नहीं (जी हाँ पत्नी भी नहीं)। फिर तो सबके रहते हुए आपकी स्थिति ऐसी हो जायेगी जैसे कोई न हो, "रहा न कोई रोवनहारा।" (महाकवि तुलसी की आत्मा चौपाई की इस पंक्ति को यहाँ उतारने के लिए मुझे क्षमा करे)।

(2) उपर्युक्त उपायों से आपको जिन लोगों से लाभ मिलने वाला है, उन्हें मेरा यह बहुमूल्य लेख कतई न पढ़ने दें। पत्नी को तो इसकी हवा भी न लगने दें। यदि उसे पता चल जाय तब तो भगवान ही मालिक। फिर तो रक्षा में हत्या वाली बात चरितार्थ हो जायेगी। आपके न्यूमोनिया, टायफायड से ग्रसित हो जाने पर भी वह यही समझेगी कि यह सब आपका ढोंग है और कड़कदार चाय तथा कुरकुरे-नमकीन व्यंजन के लिये आपने सोच-समझकर यह सब किया है। परिणाम अति भयावह भी हो सकता है। यूं तो सर्दी-जुकाम से मौत बहुत कम होती है परन्तु कहीं आप मृत्युदेवी की गोद में.....।

हिन्दी पखवारा - हिन्दी दिवस २००५
एक रिपोर्ट

–हिन्दी कक्ष

राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय से प्राप्त दिशा निर्देश के अनुपालन में इस वर्ष भी महालेखाकार के कार्यालय 'महालेखाकार भवन' में हिन्दी पखवारा का आयोजन किया गया । यह आयोजन प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना एवं महालेखाकार (ले.एवं ह.), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न किया गया ।

हिन्दी पखवारा समारोह का शुभारम्भ दिनांक 01.9.2005 को 2.30 बजे अपराहन में किया गया । माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा ने हिन्दी पखवारा के औचित्य एवं राजभाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला । इस पुनीत अवसर पर उन्होंने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से समस्त कार्यालयीय कार्यो का निष्पादन हिन्दी में ही करने की अपील की ।

दिनांक 02.9.05 से 12.9.05 तक हिन्दी कार्यशालाएँ एवं विभिन्न प्रतियोगिताएँ– हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता इत्यादि अत्यन्त सुन्दर ढंग से आयोजित की गई ।

दिनांक 14.9.2005 को 'हिन्दी दिवस' समारोह का भव्य आयोजन किया गया । यह समारोह दो चरणों में हर्षोल्लास से मनाया गया । प्रथम चरणों में महालेखाकार (ले.एवं.ह.) कार्यालय के श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' ने समारोह का संचालन करते हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम को आगे बढ़ाया । संचालन के कार्य में इसी कार्यालय के श्री राजू कुमार सिंह ने भी सक्रिय सहयोग किया । समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्री विक्रम चन्द्र ने की । तदुपरान्त 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में प्राप्त माननीय गृह मंत्री (भारत सरकार) के संदेश का वाचन उपमहालेखाकार श्री उदय शंकर प्रसाद ने किया ।

'हिन्दी दिवस' समारोह के शुभ अवसर पर आमंत्रित मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवि श्री विश्व रंजन ने लेखा कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का लोकार्पण किया तथा सारगर्भित भाषण दिया । उन्हीं के कर-कमलों से विजेता प्रतियोगियों को पारितोषिक एवं हिन्दी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित साहित्यकार एवं चित्रकार माननीय डॉ. ललित कुमुद ने भी लेखापरीक्षा कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का लोकार्पण

किया । इस पावन अवसर पर उन्होंने कहा कि "हिन्दी हमारे देश के करोड़ों नर-नारियों के हृदय एवं मस्तिष्क की भाषा है । इसका सम्यक विकास होना निश्चित है । यह राष्ट्रीय भाषा ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भी बन चुकी है ।"

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री विक्रम चन्द्र ने भी अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "हिन्दी हमारी राजभाषा है । हमारे यहाँ हिन्दी में अधिकांश कार्य किये जाते हैं । इसके सही विकास में हमलोगों को और ज्यादा प्रयास करना होगा ।" इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी को मजबूत बनाने एवं अधिकाधिक उपयोग में लाने की अपील की ।

हिन्दी दिवस समारोह के द्वितीय चरण में भव्य कवि-गोष्ठी आयोजित की गई । इस कवि-गोष्ठी में आमंत्रित कविवृन्द–डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, डॉ. रवीन्द्र राजहंस, डॉ. ललित कुमुद, श्री सत्यनारायण, श्री कमला प्रसाद, श्री विश्व रंजन, श्री रघुनाथ प्रसाद, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री उदय चन्द्र झा 'विनोद' तथा श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया । श्रोताओं ने भी करतल ध्वनि से कवियों का मान-सम्मान किया । कवि मंच की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ. खगेन्द्र ठाकुर ने की तथा संचालन ख्याति प्राप्त साहित्यकार श्री सत्यनारायण ने की ।

समारोह के अंत में उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री विक्रम डी मुरूगराज ने समारोह को सफल बनाने में कर्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा सादर आमंत्रित कवियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया और सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया

कतिपय महत्वपूर्ण सूक्तियाँ

- हिन्दी भारतवर्ष के हृदय-देश में स्थित करोड़ों नर-नारियों के हृदय एवं मस्तिष्क को खुराक देने वाली भाषा है।

- डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

- हिन्दी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता है।

- डॉ० लोथर (जर्मनी)

- भारत फूलों का एक गुलदस्ता है, जिसमें से सभी धर्मों की खुशबू आती है।

- इकबाल

- राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।

- महादेवी वर्मा

- संस्कृत माँ, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

- डॉ० कामिल बुल्के

- हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,
  यों तो रूस और अमेरिका, जितना है उसका जनराज्य।
  बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र की, गिरा आप गूँगी असमर्थ,
  एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

- हिन्दी किसी के मिटाने से मिट नहीं सकती।

- चन्द्रबली पांडेय

- राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

पटना से 90 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित सुविख्यात
ऐतिहासिक नालन्दा विश्वविद्यालय का खंडहर।

Printed by : Pragati Printers, Mob. : 9431426300